शोभित तिल चिबुकपर सुन्दर सो छबि कहत न आईजी ॥
लजत कपोत कंठ लखि दरषित पीक लीक झलकाईजी ॥१॥
बाहु मृनाल लाल छबिछाई पाणि सरोज सुहाईजी ॥
कुच युग चक्रवाक जनु नीके रोमावलि तट छाईजी ॥
त्रिवली तरल तरंग सुहाई नाभि मनोहरताईजी ॥
कृष कटि किंकिणि युत अति सुन्दर सो छबि वरनि न जाईजी

दोहा–रंभ खंभ युग अति छबी, पग नूपुर छबि भार ॥
लजत कामगज चलन लखि, पायलकी झनकार ॥

चौबोला-पायलकीझनकार चलनगति अति छबि परमसुहाईजी
बरनेको पद पंकज शोभा हरि मन भ्रमर लुभाईजी ॥
निगम नेति नित गावत जाको सो राधा वश माईजी ॥
ज्यों चकोर चंदा वश त्योंहीं प्यारी वशहि कन्हाईजी ॥ १ ॥
देखे विन क्षण रह्यो नजाई प्रेम विवस बनवारीजी ॥
उझकि झरोखाझांके आई अंग शृंगारति प्यारीजी ॥
भूषण वसन अंग अंग शोभा रुचि रुचि सकल शृंगारीजी ॥
ले दर्पण देखति छबि प्यारी श्री वृषभानु दुलारीजी ॥ २ ॥

दोहा–रहे श्याम इकटक निरखि, दीठ झरोखालाय ॥
देखत प्यारीकी छबिहि, उरआनंद बढ़ाय ॥

चौबोला-उर आनंद बढ़ाय लखत हरि प्यारी छबिगिरिधारीजी ॥
इक कर दर्पण इक कर अचरा कजरा दुहुँन समारीजी ॥
कबहुँ शीशके फूल सँवारे कबहूँ अलक निरवारीजी ॥
कबहूं आड रचति केसरकी वेसर कबहुँ निडारीजी ॥ १ ॥
कबहूं रचति सुमन सों वेणी मुक्तनमाल सुधारीजी ॥
कबहूँ रिस करि भौंह सकोरे रहि निज नैन निहारीजी ॥
इकटक दर्पण ओर निहारै नेकु वदन नहिं टारीजी ॥

भई विवस प्रतिबिम्ब निहारी लखि अपनी छवि प्यारीजी ॥२॥
दोहा–अति आनँद भोरी भई, नेकु देह सुधि नाहिं ॥
यह आई कहांते बधू, कहति मनहिं मन माहिं ॥
चौ०-कहति मनहिं मन माहिं सुन्दरी कहांते यह चलि आईजी॥
करते मुकुर दूर नहिं टारे कछु मन माहिं रिसाईजी ॥
कहूँ श्याम देखे जो याही तुरत होय वश माईजी ॥
मेरे कहा चलै या आगे जो मोहन मन भाईजी ॥ १ ॥
अति सुन्दर बरनारि सुहावनि कौन लोकते आईजी ॥
कोऊ गोप कुमारि रूपकी ऐसी ब्रजमें नाईजी ॥
कैधौं आई आपहि सुन्दरि कै कोउ ल्यायो याईजी ॥
सो वैरीहै मेरो अतिशय जो ल्यायो ब्रजमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–इन शोभा हरिकी सुनी, आई सो मन जान ॥
जैसी सुन्दरि यह बधू, तैसेइ सुन्दर कान्ह ॥
चौ०-तैसेइ सुन्दर कान्ह मनहिंमन बार बार पछिताईजी ॥
पूँछति प्रतिबिम्बहि सकुचाई कहो कहांते आईजी ॥
नाम कहाहै सुन्दरि तेरो इहां कौन तोहिं ल्याईजी ॥
कौन ग्राम है तेरो प्यारी कहो सो मोहिं सुनाईजी ॥ १ ॥
मति सकुचो कहि सौंह दिवाई बोलति क्यों तू नाईजी ॥
हम तुम दिनन एक हैं गोरी तुम न कमीं अधिकाईजी ॥
इहां अकेली तू क्यों आई काउअसंग न ल्याईजी ॥
सुन्यों नहीं अन्याव इहांको यह कहि ताहि डराईजी ॥ २ ॥
दोहा–बरजोरी हरि करत हैं, भूषणलेत छिनाय ॥
जो तू अपनी पतिचहै, लौटिघरहि को जाय ॥
चौ०–लौटि घरहि को जाय कहो तोहिं मानचहै मतिमाकोजी॥
आई है तू आजाहि ब्रजमें तू उनको कहा जानैजी ॥

मनभाई जो करत सबनसों ऐसो ढीठ न आनैजी ॥
त्रिभुवनमें ऐसो कोउ नाई जैसो ब्रजमें कान्हैजी ॥ १ ॥
नेकु नहीं काऊ डर माने कंसहु ते न डराईजी ॥
उनके गुणनीके मैं जानूं कहों तोहिं समुझाईजी ॥
हम जावति मथुरा दधि वेचन घेरलई मगमाईजी ॥
तोरे हार दिये बगराई गोरस लियो छिनाईजी ॥ २ ॥

दोहा—हम अनेक तू एक है, वेगि जाहु गृह वाम ॥
प्यारीकी वाणी सुनत, हँसत मनहिं मन श्याम ॥

चौ०-हँसत मनहिं मन श्याम चकित भयेसुनतवचनसुखदाईजी
जानि दूसरी तिय प्रियपारी जात न ढिंग सकुचाईजी ॥
पुनि पुनि दृग ठहराय निहारे अति मनहरष बढ़ाईजी ॥
देखत मुकुर प्रिया करमाई लखत हरी मन लाईजी ॥ १ ॥
प्यारीके रस वश गिरिधारी देखि छबी हरषावेजी ॥
सुनि सुनि वचन हृदय सुख मानत आनँद उर न समावेजी ॥
धनि प्यारीके वचन मनोहर सुनत श्याम सुख पावेजी ॥
धनि धनि राधा रूप धन्य हरि इकटक नैन लगावेजी ॥ २ ॥

दोहा—धनि धनि वह प्रतिबिंब है, धनि छबि मुकुर निहारि ॥
धनि धनि श्रम धनि प्रेम वह, धनि धनि तनमन वारि ॥

चौबोला—धनि धनि तन मन वारि धन्यश्री राधा हरिमन भावेजी
रमा सहित विलास नित सुख पुर वैकुंठ भुलावेजी ॥
मिलन बिछुरन सुख विरहरस क्षणहिं प्रती उपजावेजी ॥
ब्रजविलास सुख रस हरीको नित्यनयो श्रुति गावेजी ॥ १ ॥
नवल प्रीति नितनव सुख शोभा नितनव रूप अपारीजी ॥
नितनव रस बिलसत नवलायुग मोहन राधा प्यारीजी ॥
करत रसीली बात लाडिली प्रतिबिंबहि सुकुमारीजी ॥

सुनि सुनि अति हरषात कन्हाई बिहारन जन हितकारीजी ॥२॥
दोहा–भई विवस तनु सुधि नहीं, रहि प्रतिबिम्ब निहार ॥
क्यों सुंदरि बोलत नहीं, बूझति बारहिबार ॥
चौबोला–बूझति बारहिबार सयानी बोलत क्यों तू नाईजी ॥
हँसे हँसाति हेरतते हेरै भौंहन भौंहतनाईजी ॥
करति परस्पर हमसों हाँसी दे किन नाम बताईजी ॥
मैं तुमको नीके करजानी भरी परम चतुराईजी ॥ १ ॥
अति सुन्दर है रूप तिहारो लखि मन रहत लुभाईजी ॥
शोभित वेसर नाक मनोहर अधरन पर अरुणाईजी ॥
दशन दमक दामिनी लजाई चिंबुक अति छविछाईजी ॥
काहे ऐसे मुखकी वाणी हमें सुनावति नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कौन तात को मात है, हो तुम काकी नारि ॥
कैरसके रिसमें भरी, सन्मुख रही निहारि ॥
चौ०–सन्मुख रही निहारि कछुकरिस कछु मनमें भय पाईजी॥
नेकहु धीर न धरत नागरी कहति मनहिं मन माईजी ॥
अति गरबीली बाम सुन्दरी यह तो बोलति नाईजी ॥
देखतही याके वश ह्वैहै वे हरि कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
भई सौति यह आय हमारी करिहै वश बनवारीजी ॥
यो वियोग उपजाय हिये में शोचरही मन प्यारीजी ॥
रही दीठ दर्पणहीं लाई नेकु न इत उत टारीजी ॥
उरमें भयो विरह दुख भारी लखि रीझे गिरिधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–चले श्याम प्यारी निकट, लखि छवि रहे लुभाय ॥
मूँदे लोचन कमल कर, औचक पाछे आय ॥
चौबोला-औचक पाछे आय कन्हाई रहे हगन कर लाईजी ॥
चकित भई प्यारी मन माहीं आये जानि कन्हाईजी ॥

डरत रही मनमें मैं जाको मिले आय हरि ताईजी ॥
तव कछु सुरति भई मन माई वह तोहीपर छाईजी ॥ १ ॥
सकुच दुराव करति पिय पाही मन मन दोउ मुसकाईजी ॥
जान बूझिके पिय घनश्यामहिं सखियन टेर सुनाईजी ॥
श्याम पिया लोचन करलाई बेनी कर परसाईजी ॥
शोभा कहा कहे कवि कोऊ बनत न बरन बताईजी ॥ २ ॥

दोहा–अति आनँद राजत दोऊ, उपमाको नहिं और ॥
मर्कत मणि कुंदन किधौं, लिये घनतड़ित अंकोर ॥

चौ०-लिये घन तड़ित अंकोरकी शोभा निजसुख तनुधर आईजी
उपमा बरनि न जात युगल छवि विहारनके मन भाईजी ॥
कोमल कर तिय नैन कन्हाई रहे मूंदि सुखदाईजी ॥
अतिहि विसाल चपल अनियारे नहिं समात कर माईजी ॥१॥
खिन खोलत खिन ढकत कन्हाई प्यारी मन मुसकाईजी ॥
जिमि मणिधर मणि प्रगट करत पुनि फणतर लेत छिपाईजी॥
श्याम अँगुरियन अंतर माई नैन दुरे दरशाईजी ॥
मर्कत मणि पिंजरामें मानों युग खंजन रहे आईजी ॥ २ ॥

दोहा–करकपोल तरुअन छवी, शोभा सहज सुहाय ॥
मनु युग कमल मिले शशिहि, अतिही मन सुखपाय॥

चौबोला–अतिही मन सुखपाय नागरी कुँवरि राधिका प्यारीजी
नागर नवल सुजान कन्हाई लखि उपमा सब हारीजी ॥
अपने करन पकरि कर पियके लीने नैन उघारीजी ॥
कीने सन्मुख आनि श्यामको पाणि पकरिके प्यारीजी ॥ १ ॥
मैं ज़ुरही सखियनके धोखे भले भले जु कन्हाईजी ॥
भले आय औचक बिनजाने मूंदे लोचन आईजी ॥
कैसे दौरि पैठ गृह आये नेकहु जान न पाईजी ॥

तुम हौ तिय मनहरण कन्हाई तुम गति जानि न जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—तब हरि मन अति हर्षकारि, लई प्रिया उरलाय ॥
मुकुर[1]कथा मुख भाषि सब, दीनी श्याम सुनाय ॥
चौबोला—दीनी श्याम सुनाय नागरी सुनतहि कछु मुसकाईजी॥
चितै नयन कछु मनहिं लजाई कहती सुनहु कन्हाईजी ॥
मैं तो अपने मन्दिर माई सहज लखति परछाईजी ॥
तुम्हरी महिमा पिय को जानै अति सुन्दर सुखदाईजी ॥ १ ॥
हँसत चले तब कुँवर कन्हाई भक्तनके सुखदाईजी ॥
हरषि गये उत नँदकेलाला इत प्यारी हरषाईजी ॥
जब प्रतिबिंब सुरति जिय आवै तबहिं सकुचि रह जाईजी ॥
तिहिं अंतर सखियन सँगल्याई चन्द्रावलि तहँ आईजी ॥ २ ॥
दोहा—लखि प्यारी आदर कियो, बैठारी हितमान ॥
सादर सन्मानी सबै, दिये हर्षि कर पान ॥
चौबोला—दिये हर्षिकर पान करन सुख चाहत पिय सँममाईजी॥
गदगद मुखते बैन बारही बार कहति सुख पाईजी ॥
झलक प्रेम जल नैनन छायो आनँद उर न समाईजी ॥
कहति सखी सुनि राधा गोरी आज कहा हरषाईजी ॥ १ ॥
इतनो आदर कबहुँ न पायो हम तेरे नित आईजी ॥
पायो आज परचो कछु तेरो कै मिले तोहिं कन्हाईजी ॥
उमँग्यो प्रेम हरप उरमाई हमें कहति क्यों नाईजी ॥
सुनि सखियनके वचन सयानी कहति प्रिया हरषाईजी ॥ २ ॥
दोहा—आये मेरे आज हरि, महिमा कही नजाइ ॥
सुनो सखी तुमसों कहों, याविधि मिले कन्हाइ॥
चौ०-याविधि मिले कन्हाइ सखी मैं अपनो अंग शृँगारीजी ॥

१ दर्पण। २ परछाहीं।

लिये मुकुरकर वदन निहारी तब आये गिरिधारीजी ॥
पाछे आय भये हरि ठाढे अतिहिं चतुर बनवारीजी ॥
ताहि कहत सखि आवत लाजै भयो मोहिं भ्रम भारीजी ॥१॥
लखि अपनो प्रतिबिंब भुलानी आन तीय कोउ जानीजी ॥
पाछेते हरि आय अचानक मूंदे दृग सुखदानीजी ॥
भई चौंकि चकृत जबहीं मैं तबहिं सुरत उर आनीजी ॥
लागी देन उरहनो तुमको हरिहि जानि सकुचानीजी ॥ २ ॥

दोहा–हिय हरषीं सब गोपिका, सुनि राधा मुख बात ॥
कहत धन्य तू लाडिली, पुलकि प्रफुल्लित गात ॥

चौ०-पुलकि प्रफुल्लित गात हरषि मन कहति सकल मुसकाईजी।
श्याम संग सुख लूटतहैरी अब यह छूटत नाईजी ॥
श्याम भये तेरे अनुरागी तू उनके मन भाईजी ॥
तेरो अंतर हित पहिचाँने प्रीति विवस सुखदाईजी ॥ १ ॥
क्षण नहिं रहत तोहिं बिन देखे तेरे घर हरि आयेजी ॥
चतुर रूप गुण तुम दोउ नीके सबहिनके मन भायेजी ॥
आज श्याम मेरे घर आये बड़े भाग्यकर पायेजी ॥
देख दरश नैनन सुख पायो करिहौं आनँद बधायेजी ॥ २ ॥

दोहा–यह तुम्हरो उपकार अलि, आनि मिलाये धाम ॥
उन मेरे अपराध सब, क्षमा कियो घनश्याम ॥

चौबोला–क्षमा कियो घनश्याम सखी अब दशा भई यह मोरीजी
नंद नँदन पिय नैन समाये मोहिं न भावत ओरीजी ॥
सुनि यह राधाकी मुख बानी कहति हरषि सब गोरीजी ॥
नंद नँदन वृषभानु किशोरी चिरजीवहु यह जोरीजी ॥ १ ॥
प्रेम भरे शोभित छबि आछे भरे आनंद अपाराजी ॥
युगल माधुरी भरे सकल रस सकल सुखनके साराजी ॥

रूप रसिक गुणनिधि आति दोऊ करत अनेक विहाराजी ॥
विहारन हरिजनकें सुखदाई राधानंद कुमाराजी ॥ २ ॥

अथ नयनअनुराग लीला।

दोहा–भरी हरी अनुरागमें, सब मिल ब्रजकीनारि ॥
लोक वेद कुलकानि सब, दीनी सबै विसारि ॥

चौबोला–दीनी सबनविसारि सुनतनाहिं कोऊ कहतकहारीजी॥
सास ननदगारी देहारी सो न सुनत ब्रजनारीजी ॥
सुत पति नेह जगत यह छोरचो लोकरीति सब डारीजी ॥
जिमि अहितजत कंचुकी सो पुनि बहुरि न ताहिनिहारीजी ॥
जैसे नदी समुद्रहि जावै तृणन धार ठहरावैजी ॥
जैसे सुभट खेतचढि धावै सती बहुरि नाहिं आवैजी ॥
जैसे भजै नन्द नन्दनको नेकु न मन डरल्यावैजी ॥
तैसेहि प्रेम विवस गिरिधारी युवतिनको मनचावैजी ॥ २ ॥

दोहा–ब्रज वनिता मनमें बसत, बिन देखे न सुहाइ ॥
सखिन सहित बैठी प्रिया, आये तहां कन्हाइ ॥

चौबोला–आये तहां कन्हाइ भीर लखि सकुचरहे नँदलालाजी॥
ताते निकट गये हरि नाईं ढिग बैठी ब्रजबालाजी ॥
ताही मग निकसे सुखदाई नटवर रूप विसालाजी ॥
शीश मुकुट श्रवणन कुंडल छबि उर चटकीली मालाजी ॥१॥
पीत बसन काटि काछनि सोहै तनु दुति श्याम तमालाजी ॥
बंक विलोकनि मृदु हँसनि छबि चलत चटकनी चालाजी ॥
रसिक नवल नागर छयल हरि अंग अंग छबि लाजाजी ॥
औचक देखि श्याम ब्रजबाला भई चकित बेहालाजी ॥ २ ॥

दोहा–जात चलत ब्रज खोरि हरि, कोटि काम छविजाल ॥

फिर फिर हेरत तियन तन, फेरत कमल सनाल ॥
चौ०-फेरत कमल सनाल तिलक मृग मद शोभा अति पाईजी ॥
शोभित सुभग अलक घुँघराकी सो छबि परम सुहाईजी ॥
मृदु मुसकाय मरोरत भौंहैं नैनन सैन चलाईजी ॥
निरखत ब्रज युवती विधि कानी दुख सुख मन अकुलाईजी ॥१॥
गये कल्पतरु छांह कन्हाई रूप ठगोरी लाईजी ॥
लागीं कहन परस्पर बाणी मन अनुराग बढ़ाईजी ॥
सुनहु सखी यह कुँवर कन्हाई लेतरहि मनहिं चुराईजी ॥
क्षण क्षण प्रति छबि और बतावै शोभा कहत न आईजी ॥२॥
दोहा-मनहिं बिको हरि हाथ सखी, हम कछु भेद न पाइ ॥
नैननि सांटी नैनसों, कियो मोल से नाइ ॥
चौ०-कियो मोलसे नाइ आपही मृदु मुसकन धन पायेजी ॥
परी रही हों बीचहिमें मैं नैना बड़ी बलायेजी ॥
अब रुचिमान लई मनहीं मन भयो श्यामको जायेजी ॥
फिरत नहीं इतहीको फेरो मैं पचिहारि बुलायेजी ॥ १ ॥
अब मनहित हरिही सों कीनो भेद कह्यो सब जाईजी ॥
मनतो गयो नैनहैं मेरे तिन हरि लिये बुलाईजी ॥
यह वहां रहत करत अब जोई सोई कहत कन्हाईजी ॥
जितहि चलत हरि तितही जाई सन्मुख रहत सदाईजी ॥ २ ॥
दोहा-रहे न काऊ कामके, भये श्यामके जाय ॥
मान अपमान न मानहीं, रहत सदा सुखपाय ॥
चौ०-रहत सदा सुख पाय जगत उपहास सहत हैं भारीजी ॥
कह्यो न मानत मेरो आली लाज संक सब डारीजी ॥
लोक लाज कुलकानि नशाई बात न सुनत हमारीजी ॥
कहँ लगि कहों सुनत कछु नाहीं कहि कहि मैं पचिहारीजी ॥१॥

ललित त्रिभंग छबीपर अटके मोसों तोरि सगाईजी ॥
हरि अब तिनको छोरत नाहीं बैठ रहत तिनमाईजी ॥
राखे बाँधि अलककी डोरी भाजजाय कहुँ नाईजी ॥
अब यह लोचन नाहिं हमारे भये श्यामके जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बसे श्याम रसरूपये, श्याम बसे इन माहिं ॥
नैननहींको दोष यह, दोष श्यामको नाहिं ॥

चौबोला—दोष श्यामको नाहिं लखी इन तनक मंद मुसकानीजी
हठ करि भये गुलाम श्यामके कीनी जो मन मानीजी ॥
बोली अपर एक ब्रजनारी सुनहु सखी मम बानीजी ॥
लखत जबहिं ये कुँवर कन्हाई उठ धावत हित जानीजी ॥ १ ॥
मेरो हटक्यो नेकु नमाने लखत छबी ललचाईजी ॥
ज्यों खग छूटत फंद वधिकतें उडत वेग अधिकाईजी ॥
जाय सघन बन मांझ समावे फिरत न बहुरि डराईजी ॥
त्यों दृग[1] मोते छूटपराने हरि छबि बन रहे जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—वह छबि निरखत हरषि उर, अब वे इताहि न आत ॥
यदपि सुधा[2] छबि पिवत वे, तदपि नाहिं अघात ॥

चौबोला—तदपि नाहिं अघात न जानी कहा इनके मनभाईजी ॥
देख श्याम तनु छबि अधिकाई रहे तहाँ ललचाईजी ॥
लेत न बनै तजो नहिं जाई लखि निज सुधि बिसराईजी ॥
रहे विचारहिं मांझ भुलाई लेत न तज इत आईजी ॥ १ ॥
नैनन चोर सदन हरि मुखकी छबि धन चोरी जावेजी ॥
तजत बनत नहिं एकहु तामें लेत न एकहु आवेजी ॥
गये छबि चोरन हरिके मुखकी चोरतमें न बनावेजी ॥
हरि चितवन बांधे इन धरिकै अब नहिं छूटन पावेजी ॥ २ ॥

१ आंखें। २ अमृत।

दोहा–निदरि गये सो फलमिल्यो, अब वहां रहे बँधाय ॥
नाहिं मान्यों हमरो कह्यो, अब कहा चलतबसाय ॥
चौ०-अब कहा चलत बसाय कहति इक औरहि गोप कुमारीजी
सखि ये नैन किधौं बटपारी इन सब बात बिगारीजी ॥
कपट नेह हमसों करि भारी करि गुरुजन ते न्यारीजी ॥
श्याम दरशलाडू करदीनो सब कीनी हम सारीजी ॥ १ ॥
प्रेम ठगोरी शिरपर छाई संगहि संग लगाईजी ॥
विरह फांसि गरडारि हमारे रही देह सुधि नाईजी ॥
कुललज्जा संपदा हमारी सो सब लई छिनाईजी ॥
लगन गांठ दृग छूटत नाहीं परी मोह बनमाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सुमिर नैन गुण मनहिं मन, नेह जीवनहिं जाइ ॥
कासों कहिये बात यह, भये नैन दुखदाइ ॥
चौबोला–भये नैन दुखदाइ हमाहिं सखी दियोविरहदुखभारीजी
आपसदा दरशन सुखलेहीं करी मोहि इन न्यारीजी ॥
इहि विधि निदरति सकल दृगनको भरी प्रेम ब्रजनारीजी ॥
होवति मगन विरह रस सुख मैं नैननि श्याम निहारीजी ॥१ ॥
यही भजन यह ध्यान श्याम गुण रूप कथा हरिकेरेजी ॥
नाहिं जानति कछु आन सुन्दरी निशिदिन सांझसवेरेजी ॥
कोऊ कहति नैन खग मेरे फँसे फंद हरिकेरेजी ॥
छबि कण लखि ढ़िग गये गये फंद चितवनके उरझेरैजी॥ २ ॥
दोहा–हरि छबिपर अटके नयन, अति विलाप विवसाय ॥
सदा रहत सन्मुख बने, दुख सुख सब बिसराय ॥
चौ०-दुख सुख सब बिसराय जगतमें स्याने अतिहि कहाईजी ॥
वह छवि हेतु गये अतुराई जानि लोभ मनमाईजी ॥
सोतो कछू हाथ नाहिं आयो आप बँधाये जाईजी ॥

हार जीत ये नैनन जानै मान पमानहुँ नाईजी ॥ १ ॥
परे रहत शोभाके द्वारे नेकहु लाज न आईजी ॥
जाकी बान परी सखि जैसी तैसी ताहि सुहाईजी ॥
लोभैके वश जिमि मृग मीनै आपहि आवत धाईजी ॥
रूप लालची नैन सखी ये भये श्याम वश जाईजी ॥ २ ॥
दोहा—लोक लाज कुलकानि तजि, अति मन हर्ष बढाय ॥
मिले त्रिवेणी द्वै नयन, श्याम सिंधुमें जाय ॥
चौबोला--श्याम सिंधु में जाय सखी अब ये दृग धाय समायेजी ॥
मन वच क्रम उरसे अनुरागे रहत सदा सुख पायेजी ॥
भूल गये मग दहिने बांये हरिके सन्मुख आयेजी ॥
ज्यों मणि देखि उरग सुख पाये ज्यों चकोर शशिचायेजी ॥ १ ॥
जोधन पाय रंक सुख पावै सो लक्षण इनकेरेजी ॥
अब ये नैन फिरत नहिं फेरे कीने यत्न घनेरेजी ॥
देखे सुभग श्याम इन जबते ये न रहे सखि मेरेजी ॥
येशिशुकी जब अरन अरेरी मैं घूंघट पट हेरेजी ॥ २ ॥
दोहा—मानहुँ प्रतिपाले इनहिं, संग लगे उठधाय ॥
मृदु मुसकनरस पायके, मतिगति दई हिराय ॥
चौबोला—मति गति दई हिराय निमिषबल धीर न उरमें पायेजी॥
अति हठ परे ननेक विचारैं इनके मन हरि भायेजी ॥
लाज लकुट उरमें डरपाये वे नहिं डरत डरायेजी ॥
फिरे न मैं बहुभाँति बुलाये गये हरिके फुसलायेजी ॥ १ ॥
अब हम उन बिन तलफतभारी मरत शोच वश माईजी ॥
ग्रथ खोटो सखिभयो आपनो दोष पारखहि नाईजी ॥
प्रेम विवस त्रिय वृन्द दृगनको ऐसे दोष लगाईजी ॥
तबहिं छैल ब्रजचन्द नन्दके बाँसुरि टेर सुनाईजी ॥ २ ॥

अथ मुरली लीला ॥

दोहा–नैननकी बातैं करैं, कृष्ण प्रेम रह्योछाय ॥
परी टेर श्रवणन तबै, हरिकी मुरली आय ॥

चौबोला–हरिकी मुरली आय सुनत भई चकित सबै मनमाईजी
परी आय मनुशीश ठगोरी रही देह सुधिनाईजी ॥
ह्वैगई मानहु चित्र लिखीसी अँखियन सुधि बिसराईजी ॥
इकटकरही पलक बिसराई दुख सुख बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
देह दशा सब तुरत भुलानी विवस भई ब्रजनारीजी ॥
कबहूँ मुरली नाद सुनत सब कबहुँक रहत विचारीजी ॥
कछुक संभारि धीरज उर धारी कहति परस्पर सारीजी ॥
वे वैरिन यह सौति हमारी अँखियनते यह प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा–कितते आई ब्रजहि यह, भई कठिन दुख दाय ॥
आवतही ऐसी भई, किये श्याम वश आय ॥

चौबोला–किये श्याम वशआय जारसको हमतप कीनोंसारीजी।
सोरस मुरली लेत सखी अब वशकीने गिरिधारीजी ॥
गावत मीठी तान मुरलि सँग अधर धरे बनवारीजी ॥
याही के वश भये श्याम अब या सम और न प्यारीजी॥ १ ॥
नई सौति हरिके मनभाई यह नभली ब्रज आईजी ॥
नेक अधरते करत न न्यारी याके वशहि कन्हाईजी ॥
मधुर वचन सुनि रीझ रँगे हरि याहीके रँग माईजी ॥
करपल्लवन ताहि बैठारी तापर ग्रीव लगाईजी ॥ २ ॥

दोहा–क्षण क्षण प्यावत अधर रस, अति अनुराग बढ़ाय ॥
देखहु याकी अधिकता, पीयत हमहिं जनाय ॥

चौबोला–पीयत हमहिं जनाय ढाठभई आवतही ब्रज माईजी ॥

परी रहत बनमें धौं कैसी आवतही इतराईजी ॥
आवत इन हमरो धन लीनों अबकहा करिहै माईजी ॥
मैं जो कहत सुनोरी गोरी मेरे मन यह आईजी ॥ १ ॥
कछु दिनमें यह हमहि न गिनि है यह मुहिं परत लखाईजी ॥
मुरली दूरि कराये बनिहै ये हमको दुखदाईजी ॥
फिरि हैं याके संगहि लागी लोक लाज बिसराईजी ॥
जब जब श्याम बजै हैं याही मोहन मुखहि लगाईजी ॥ २ ॥
दोहा—यह जानति टोना कछू, करि हैं नाना रंग ॥
देखहु हरि कैसे भये, या मुरलीके संग ॥
चौबोला—या मुरलीके संग सखी अब कैसे भये कन्हाईजी ॥
यह सुनि कहत एक ब्रजनारी कहा कहति तू आईजी ॥
जाके वश नँद नन्दन ऐसे दूर होत अब नाईजी ॥
एक पांय ठाढे ता आगे अंग त्रिभंग बनाईजी ॥ १ ॥
कर पल्लवन पलोटत पाईं अधरनसेज सुहावेजी ॥
कबहुँक मिल गावत हरितासों सुनत अधिक सुख आवेजी ॥
मुरली मोहनको अति भावे वाके गुणको पावेजी ॥
जानत राग रागिनी जेते हरिके सँग मिल गावेजी ॥ २ ॥
दोहा—नाना विधि गावत सुरन, तानतरंग उपाय ॥
जैसे रीझत साँवरो, तैसिय भांति रिझाय ॥
चौ०-तैसिय भांति रिझाय ताहिते मुरली हरिमन भावेजी ॥
राखत है मुखही सों लागी अधर सुधारस प्यावेजी ॥
मधुर मधुर कल वचन सुनावे हरिको मनहिं चुरावेजी ॥
ऐसोको अब हरिके करते मुरली दूर करावैजी ॥ १ ॥
अब मुरली छूटत नहिं आली किये श्याम वश आईजी ॥
प्रगट कियो सब मैं मुरलीधर अपनो नाम कन्हाईजी ॥

मुरली लूटत अधरन को रस हरिको करि वश माईजी ॥
निठुर भई बोलत हम सबते उर डर मानति नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—निठुर वचन हम सों कहत, हरिको मन उचटात ॥
लोक लाज कुलकानितजि, हमको निलजकरात ॥
चौबोला—हमको निलज करात ऐसे ढँग मुरलीके लख पाईजी॥
हमते निठुर किये वनमाली मधुरे वचन सुनाईजी ॥
यहतो निठुर काठकी जाई प्रगट किये गुण आईजी ॥
अपनो स्वारथ जान श्याम सँग कपट रागिनी गाईजी ॥ १ ॥
मुरली निठुर किये वनमाली हरि हमको विसराईजी ॥
वनकी व्याधि कहा ये आई ऐसे तिय पछिताईजी ॥
कहा भयो मोहन मुखलागी अपनी प्रकृति न जाईजी ॥
एक सखी बूझत भइ ऐसे मुरली कहां ते आईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहां रहत मुरली सखी, काकी है यह जाइ ॥
कौन जात याकी अली, कैसे इत यह आइ ॥
चौबोला—कैसे इत यह आइ कौनसे मात पिताकी जाईजी ॥
बोली अपँर एक ब्रजनारी तुम यह बात न पाईजी ॥
मुरलीको कुल धर्म सखी तुम सुन्यो अबहिंलों नाईजी ॥
याकी जात कर्म सब तुम अब सुनों मैं तुमहिं सुनाईजी ॥ २ ॥
मैं जानति याके गुण आली कहों तुमहिं समुझाईजी ॥
सुन कानन सुख पैहो तुमहूँ जहँते मुरली आईजी ॥
वनमें रहत बांस कुल जाई यहतो जाति सुहाईजी ॥
जलधर पिता धरणि महतारी तिनके गुणहुँ सुनाईजी ॥ २ ॥
दोहा—वनहूँते न्यारे बसै, निपटहि जहां उजार ॥
मात पिता अरु मुरलिया, भरे गुणन आपार ॥

१ स्वभाव । २ उत्पन्नकी । ३ दूसरी । ४ मेघ ।

चौबोला—भरे गुणन आपार न जानी कौने फलहि कन्हाईजी ॥
कृपा करी यापर बनवारी सो कछु जानि न जाईजी ॥
प्रथम कहौं मेघनके कर्मा अरु कुल धर्म बताईजी ॥
गिरि वन सर सरिता सब ठाईं वे बरसत जग माईजी ॥ १ ॥
एक बूँदको मरत पियासा चातक ध्यान लगाईजी ॥
धरणी सबहीको उपजावे आप कुमारि कहाईजी ॥
उपजतहै पुनि तृण षट जामें सो कछु क्षोह न राईजी ॥
अब आगे गुण प्रगट बखानों जाकुल मुरली जाईजी ॥ २ ॥

दोहा—तिनहींते प्रगटत अनल, ऐसी याकी झार ॥
प्रगट भई जा वंशमें, करत जारतिहिं छार ॥

चौबोला—करत जार तिहिं छार मुरली यह ऐसे गुणकी आईजी
याते निठुर और को आली निजकुल आइ दहाईजी ॥
याकी जाति श्याम नहिं चीनी बिन जाने अपनाईजी ॥
कहिये चलो श्याम सों जाई तजिहैं सुनत कन्हाईजी ॥ १ ॥
श्यामहिं कहा भलो तुम जानों कंहा सखि बात सुनाईजी ॥
निज कुल जारत बिलम नलाई तासों कौन भलाईजी ॥
जाको हम षट ऋतुतप कीनो सो फल मुरलीपाईजी ॥
विमुख तुरत उत्तम फल पाई सन्मुख विमुख कहाईजी ॥ २ ॥

दोहा—घरके बन बनके घरहि, कीने श्याम सुजान ॥
चीन्हे कपटी श्यामको, परी हमें अवजान ॥

चौबोला—परी हमें अवजान सखीरी श्याम कपट की खानैजी ॥
एक अंगकी प्रीति हमारी वे बहु तरुणि न मानैजी ॥
ज्यों चकोर दाहित माने चंद्र न मन कछु जानैजी ॥
जलके तीर मीन तनु त्यागै जल न दया उर आनैजी ॥ १ ॥
ज्योंपतंग उड ज्योति जरेरी ज्योतिहि दया न आईजी ॥

चातक एक मेघको जाने मेघ न प्रीति जनाईजी ॥
इन सबहिनते निठुर कन्हाई तैसि मिली यह आईजी ॥
अब मुरली अरु श्याम कि आली जोरी बनी बनाईजी ॥ २ ॥
दोहा–काहिन प्रीति बढावही, ये अहीर वह बैन ॥
जैसे ये तैसी वह, दोउअनको मनयेन ॥
चौबोला–दोउअनको मनयेन मुरलिया हरिहीसों मनलावेजी॥
हरिको मन मुरलीसों मान्यो दोउ मिल प्रीतिं जनावेजी ॥
निठुर निठुर मिल बात बनावें यातेहि धेनु चरावेजी ॥
वाहीकी वंसी अति प्यारी वाकिहि लकुट सुहावेजी ॥ १ ॥
हमसों वैर सदा हरि कीनो वन में रोक रखाईजी ॥
भेदहि भेद हरचो मन हमरो सब कुलकानि मिटाईजी ॥
बहुरि बोल अँखियनको लीनी अब मुरली मन भाईजी ॥
सुनसजनी बिन काज खिजौंरी विधि सों नाहिं बसाईजी ॥२॥
दोहा–कर्म करै सो को करे, करहिं ये सब करतार ॥
हम तप करि इतनो पची, घर कुलते दइटार ॥
चौबोला–घर कुलते दइटार लकरिया बनकी हरिमन मानीजी
श्याम अधर शिर छत्र धराये सो अब भइ पटरानीजी ॥
भये नृपति हरि मुरली रानी और न नारि सुहानीजी ॥
बनते आनि सुहागिन कीनी जाति पांति नहिं जानीजी ॥१॥
पूरब कठिन कियो तप भारी कर हरिसों अनुरागाजी ॥
बैठि अधर रस लेत मुरलिया पूरब फल यह लागाजी ॥
जो तप करि तायो तन अपनो सो मेटति अब दागाजी ॥
अब गर्जति अधरन चढ़ि हरिके धनि मुरलीको भागाजी ॥२॥
दोहा–हरिको परसतही सकल, दीने कलंक बहाय ॥
ऐसो मुख लूटन लगी, कौन सुकृत फलपाय ॥

चौबोला–कौन सुकृत फलपाय मुरलिया ऐसी हरि मन भाईजी
तनु कठोर मन जड रसहीनी अंतर सारहु नाईजी ॥
लघुता अंग न कछु गरबाई बांस वंश निकाईजी ॥
छिद्र विशाल सुभगतनु छाये हरिकर मांहिं सुहाईजी ॥ १ ॥
विधिते प्रबल भई यह मुरली हरि मुख आसन चायोजी ॥
उलटि दई हरिकी मर्यादा वेद नाद जब गायोजी ॥
जड चेनन चेतन जड थिर चर चर सो थिर ठहरायोजी ॥
एक बार श्रीपति सिखरायो ज्ञान विधाता पायोजी ॥ २ ॥

दोहा–लगे रहतहैं कानहीं, यासों कुँवर कन्हाइ ॥
और कौन यासों प्रबल, किये सकल वश आइ ॥

चौबोला–किये सकल वश आइ औरको ऐसी ताहि बताईजी ॥
भई श्याम सँग मुरली जैसी तीन लोक कोउ नाईजी ॥
सुर नर मुनि शशि खग मृग जेते सलिल समीर सुहाईजी ॥
भये सकल वश या मुरलीके ध्वनि सुनि धीर न आईजी ॥ १ ॥
रही विश्व परजीत बांसुरी मोहन मुखहि लगाईजी ॥
मेटि सकल श्रुति नीति रीति इन अपनी चाल चलाईजी ॥
सखि मुरली को दोष नदेहो सोच देख मनमाईजी ॥
सो श्रम और कौन पैहोई जोइ मुरली कर आईजी ॥ २ ॥

दोहा–कियो कठिन व्रत श्याम हित, दुखसुखसमकर मानि॥
हरि याकी दृढ़ता लखी, तबबन ते गृह आनि ॥

चौबोला–तबबनते गृहआनि सखी तुम मुरलीको नहिंजानीजी
जब याकी करतूत सुनोंगी कहिहौ धन्य बखानीजी ॥
बनमें रही एक पगठाढी अति मन दृढता ठानीजी ॥
शीत उष्ण बरषा सहलीनी रही धीर उर आनीजी ॥ १ ॥
कसकी नहीं नेक जब काटी शाखापत्र छटाईजी ॥

राखी डारि घाममें आनी झुरि झुरि देह सुखाईजी ॥
ताय सुलाख परखि हरि लीनी जब हरिके मनभाईजी ॥
मुरली सही इती कठिनाई तब पाई ठकुराईजी ॥ २ ॥
दोहा—तप फलभोगत मुरलिया वृथा करत तुम आर ॥
निज गुण रिझये श्याम उन, गुणियन गुणी पियार ॥
चौबोला-गुणियनगुणी पियार परस्पर गुणिन गुणी मन चावैजी॥
जोकरनी मुरली करआई सो तुम ते न वन्यावैजी ॥
अति श्रमकरि हरिको वश कीने अब याको को पावैजी ॥
परम पुनीत प्रीति हरि देखी मुरली हरि मन भावैजी ॥ १ ॥
देखहुरी याकी अधिकाई कहां लगि करें बड़ाईजी ॥
जबहीं श्याम अधर सों परसे तब यह नाद सुनाईजी ॥
अति आनन्द सबन उपजावै तान तरंग उपाईजी ॥
जियत श्याम अधरामृत पाई छूटतही मुरझाईजी ॥ २ ॥
दोहा—जाको जीव अधर रस, क्योंन करै हरि हेत ॥
मुरली हरि हित तप कियो, सोफल अब यह लेत ॥
चौ—सोफल अब यह लेत मुरलिया जब लगि हरि नहिं पायोजी
सहे कष्ट बोली नहिं वाणी निश दिन ध्यान लगायोजी ॥
जब मोहन वश करि इन पायो तब अधिकार जनायोजी ॥
तब हरिसों बांछित फल पायो अधरामृत मन भायोजी ॥ १ ॥
या सम और चतुर को आली कीने वशहि कन्हाईजी ॥
क्यों नहिं त्रिभुवनको मनमोहै जो हरिके मन भाईजी ॥
मुरलीकी सर मतहि करोरी कहत तुम्हें समुझाईजी ॥
सुनि ताको यश कान तुम हुँ सब धनि धनि कहिहो बाईजी॥२॥
दोहा—अमर भई अब मुरलिया, अधरामृत करि पान ॥
शारदादि यश गावहीं, तिहुँ पुर होत बखान ॥

चौबो०-तिहुँ पुर होत बखान हमहुँ सब मिल तप कीनो भारीजी॥
ताको फल हमको हरि दीनो निलज करी सब नारीजी॥
लीने भूषण बसन चुराई धरे कदमकी डारीजी॥
तब अम्बरदे धन्य बखानी हम सुख मान्यो सारीजी॥ १॥
मुरली सों बिन काज खिजोरी अपने भाग्य निकाईजी॥
करो हेतु मुरली सों लरो जिन जीतोगी तुम नाईजी॥
मुरली हमते तप अधिकाई ताके वशहि कन्हाईजी॥
तनक आश दरशनकी हैरी सोऊ करते जाईजी॥ २॥

दोहा—बहु तरुणी रमणीय हरि, येउ मिली इक आय॥
तुम मुरली सों जिन खिजो, राखहु प्रेम जनाय॥

चौबोला—राखहु प्रेम जनाय प्रेमहीं मानत मोहन प्यारौजी॥
वे सुजान सब जान रहैंगे तुम जिन उरते टारौजी॥
सब तजि भज्यो जन्मते ताई अब जिन वाहि विसारौजी॥
मुरली सों कहा काज हमारो जीवहु नन्ददुलारौजी॥ १॥
हमहित कीनो श्यामसुन्दर सों मेटिलोक कुलकानीजी॥
ताही सों हित चहिये आली जासों है पहिचानीजी॥
हमको है यह आश हरी अंतर्यामी सुखदानीजी॥
करिहैं नाहिं निराश हमारे उर अंतरकी जानीजी॥ २॥

दोहा—कहा भयो सखि बाँसुरी, रही श्याम ढिंगआइ॥
अपने करानि सुलाख हरि, राखी कुँवर कन्हाइ॥

चौबोला—राखी कुँवर कन्हाइ गुणहिंके काज तनक दुखपाईजी॥
दे अधरामृत तुरत जिवाई अब न गिनत यह काईजी॥
हमते अधिक कियो उननाई शोच देख मनमाईजी॥
वर्षै पाँच सातकी जबते तबते प्रीति लगाईजी॥ १॥
पुनि षटऋतु तप सों मन लायो विरहानलतन ताईजी॥

कैसे ये सब फल न फलेंगे मिलि हैं क्यों न कन्हाईजी ॥
तब यों कह्यो एक ब्रजनारी मुरली हरि मुखलाईजी ॥
जो अवगुण होतो या माई तो हरि छुवते नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—सुनो सखी लायक यह, सुनत श्रवण सुखहोय ॥
जैसी है यह मुरलिया, तैसी और न कोय ॥
चौबोला—तैसी और न कोय सखीरी यासों मिले कन्हाईजी ॥
काहि न प्रीति करै हरि ऐसी त्रिभुवनमें कोउ नाईजी ॥
इक युवती अरु गुणन भरीरी बोलति मधुर सुहाईजी ॥
श्रवण सुधा प्यावत हरि याको रहत अधर सों लाईजी ॥ १ ॥
देहु बजावन बाँसुरि आली हरिबरजो जिन कोईजी ॥
रसकींने रस होत सखीरी विरह विरसते होईजी ॥
आप भलो तो जगत भलोरी नातर भलो न कोईजी ॥
मुरली लगी श्यामके मुखरी हमसों सन्मुख सोईजी ॥ २ ॥
दोहा—सुनहुं कानदे कहति कहा, राधा राधा गाइ ॥
तुम हरिसों न्यारी नहीं, तुमहिं न विसरि कन्हाइ ॥
चौ०-तुमहिं न विसरि कन्हाइ जबहि जब मुरली श्याम बजाईजी
तब तब नाम तिहारो गावत विसरत इक क्षण नाईजी ॥
मुरली भई सौति जो तो हरि तेरी टहल कराईजी ॥
तू अर्धंगिन वह है दासी मेरे मन यह भाईजी ॥ १ ॥
तुम प्यारी हरि हरि तुम प्यारे मुरली कहत बखानीजी ॥
हरषीं सकल सुनत यह बानी ये ऐसी नहिं जानीजी ॥
याको शील अबै हम जानी वृथा वैर हम मानीजी ॥
करत सकल ब्रजनारि बड़ाई मुरली अधिक सयानीजी ॥ २ ॥

लावनी।

यों करत सकल ब्रजनारि बड़ाई मुरलीकी सुखपाई ॥

टेक–धनि धनियाको वह वंश बास जामें यह मुरली जाई ॥
धनि धनि याके मृदु बोल याचिके ल्याये कुँवर कन्हाई॥
येहै बंसी अनमोल ओपमा बरनतमें नहिं आई ॥
धनि धानि है याको धन्य धन्य यह मुरली हरि मनभाई॥
कहि महिमा याकी भारी, निजमुख श्री भानुदुलारी;
सुनि हरषीं सब ब्रजनारी ॥ मुरली श्री मुरलीधर केरी
उपमा कहिय न जाई॥यो करत सकल ब्रजनारि०॥१॥
जाको यश परमपुनीत सकल गंधर्वजनन मिलगुणगावै
वेदहु नहिं पावत भेद शेषहू सुनि मन अति हरषावै ॥
सब नाद विवस होजात भुवन त्रयदेव दनुज सुख पावै॥
सुनि श्रवणनको सुखहोत ललित वाणीअति परम सुहावै
जब हरि मुख याहि बजावै, सुनताहि सबको सुखआवै;
तब मति गति सब विसरावै॥शिवसनकादि समाधि भूलि
रहे ब्रह्मादिक ललचाई।यों करत सकल ब्रजनारि०॥२॥
है योग माया जो जान कृष्णकी मुरली सो सुखदाई ॥
हरिकी श्वासाके वचन बोलती लागत परम सुहाई ॥
गुणको करसके बखान मुरलिया जब नंदनन्दबजाई ॥
सुनि ब्रजललना सुखलेत मगन मन आनँद उरनसमाई
सखियन मुरली सुनि पाई, सब तनुकी दशा भुलाई;
सुधि बुधि सबहिन विसराई ॥ मानहुं लिखी चित्रकीनाई
जकि थकि रहीं तहाँई॥योंकरत सकल ब्रजनारि०॥३॥
कबहूं मानति सब दुःख सूखहू मान लेति मनमाई ॥
सब कहति कबहुँ कछु और कबहुँ सबमिलकर करतिबडाई
ऐसे सब मिल ब्रजनारि परस्पर कहि कहि अतिसुखपाई
जब ले करमें सुखदेन मुरलिया सुन्दर कुँवर कन्हाई॥

अधरन परराखि बजावै, बहु राग रागिनी गावै;
गति अमित भाँति उपजावै॥मगन जल थल जीव जहां
तहां सुनि धुनि सब रहे आई ॥ यों करत सकल ब्रज
नारि बडाई मुरलीकी सुखपाई ॥ ४ ॥

दोहा–ब्रह्मानंद जासों कहैं, सो पासंगहु नाहिं ॥
सुनि ध्वनि जल थल मगन सब, जहां सो तहां तिहि ठाहिं

चौ०-जहां सो तहां तिहि ठाहिं सकल जन ज्ञान गुमान भुलावैजी
लोक वेद मर्याद पतिव्रत सो न कछू मन भावैजी ॥
तबहिंलों मन चपल बुद्धि रहत सकल थिर चावैजी ॥
सुनत मुरली श्रवणन हरिकी लखत इक टक लावैजी ॥ १ ॥
धनि धनि तिनके भाग जगतमें धनि धनिते नर नारीजी॥
जिनके मनमें बसी बांसुरी विहारन तिनपर वारीजी ॥
युगल किशोर चरण चित आशा राखत दास विहारीजी ॥
करहु हिये मम वास जान जन मुरलीधर गिरिधारीजी ॥ २ ॥

अथ रासलीला।

दोहा–वन्दों युगल किशोर पद, श्रीराधा घनश्याम ॥
सुर नर मुनि वंदित सदा, बसत वृन्दावन धाम ॥

चौ०-बसत वृन्दावन धाम युगल पद पुनि पुनि शीश नवाऊँजी
नन्द नँदन वृषभानु नन्दनी युगल चरण चितलाऊँजी ॥
रूप राशि आनंद निधानं मंगलप्रद बलिजाऊँजी ॥
बहुर रासपति पद शिरनाऊँ रास चरित अब गाऊँजी ॥ १ ॥
वेदव्यास जो रास बखान्यो कियो सो ब्रजहि कन्हाईजी ॥
सो गंधर्व व्याह विधि जान्यो अति हरषे मनमांईजी ॥
ब्रज गोपिन हरि हित तप कीनो होय पती मन लाईजी ॥

१ आनंद। २ संसार। ३ दोनों कृष्ण-राधिका।

नंद नँदन तिनको वरदीनों बसन हरे तब तहांईजी ॥ २ ॥
दोहा–शरद रैन शुभ लग्न धारि, करिहौं तुम मन भाइ ॥
सो जब शरद सुखद ऋतुः, आई परम सुहाइ ॥
चौबोला–आई परम सुहाइ जान हरि भक्तनके सुखदाईजी ॥
गावत विरद विदत श्रुति चारी तब हरिके मन आईजी ॥
गये श्याम वृन्दावनमें जहां रहत बसंत सदाईजी ॥
श्रीवृन्दावन धाम सुखदकी शोभा बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
बरन सकै सो कवी कवन विधि इतनी बुधि कहां पाईजी ॥
भूमि लता द्रुम गुल्म तृण यह सब चैतन्य सुहाईजी ॥
सुन्दर श्याम विहार लखन हित जडस्वरूप धर आईजी ॥
ब्रह्मादिक रजछूवन पावै श्रीमुख महिमा गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–जाकी महिमा निज कही, संकर्षण प्रति श्याम ॥
चिन्तामणि मय भूमि सब, श्रीवृन्दावन धाम ॥
चौबोला–श्रीवृन्दावन धाम भूमि सब मंगलकी मेंतारीजी ॥
कृष्ण चरण पंकज रमणीसों भक्तनको सुखकारीजी ॥
फिरत श्याम जहँ नागे पाँयन चरण चिह्न तिहि ठांरीजी ॥
पावन हूँकी पावनकारी विहारन प्रभुकी प्यारीजी ॥ १ ॥
बरन बरन वट विटप सुहाये जातन बर न बतायेजी ॥
सदा सुमन फल संयुत सोहैं सुगंध स्वाद मन भायेजी ॥
जगमगात नग ज्योति लजाये नव दल परम सुहायेजी ॥
विपुल कांति शोभित बहुरंगा आति विचित्र छबि छायेजी॥२॥
दोहा–कोटि सूर्य शशि सम नहीं, परमप्रकाश सुहाइ ॥
पत्र पत्र प्राति हरि छवी, निरखत मदन लजाइ ॥
चौ०-निरखत मदन लजाय परमछबि शोभित आति अभिरामाजी
वृन्दावन तरु वेलि सुभग सब नख शिख छबिकी धामाजी ॥

वैकुंठादिक श्यामसुन्दरके और सकल शुभधामाजी ॥
ताते अति सुन्दर सुखदाई यह विहार विश्रामाजी ॥ १ ॥
विपुल कुंज मंजुल छवि छाई काम सँवारत ताईजी ॥
बहत समीर धीर सुखदाई शीतल परम सुहाईजी ॥
चित्र विचित्र विहंग मृग नाना डोलत वनके माईजी ॥
गूँजत भृंग लुब्ध मकरंदा अति छवि बरनि न जाईजी ॥ १ ॥

दोहा–तैंसिय यमुना सुखद अति, पुलिन पुनित छबिदेत ॥
झलकत रेती अति मनों, परम कांतिको खेत ॥

चौबोला–परमकांतिको खेत रेत अति झलकनपरमसुहाईजी ॥
फूले बनज विपुल बहु रंगा बरन बरन छबि छाईजी ॥
गूंज करत मधु माते भृंगा लखि मन रहत लुभाईजी ॥
श्रीवृंदावन छवि समुदाई कापै बरनी जाईजी ॥ १ ॥
वन अनूप अद्वैत बखाना पटतरको कोउ नाईजी ॥
है स्थूल वपुष प्रभु केरी ऐसी परत लखाईजी ॥
गोपी जन इन्द्री गण तामें हैं चैतन्य कन्हाईजी ॥
नित्य धाम ताहीते गायो यह पटतर मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुखनिधि रसनिधि रूप निधि, वृंदा विपिन उदार ॥
शारद नारद शेष शिव, वर्णत विधि श्रुतिचार ॥

चौबोला-वर्णत विधि श्रुति चार तासुयश अरु कोसकै बखानीजी
वृंदावन सम और दूसरो सुखद न कोऊ आनीजी ॥
सुख पावत मोहन तहँ अति मन सकल विश्व सुखदानीजी ॥
तहँ वितिस्ति इक शंख मणीमय वेद कहत यह बानीजी ॥१॥
तापर अद्भुत कमल तासुदल षोडश चक्र समानीजी ॥
योजन पंच तासु परमाना रासस्थान बखानीजी ॥
मध्य करणिका अति रमणीया बैठे तहाँ सुखदानीजी ॥

शोभा अमित[1] कहाति श्रुति ताते गिरा[2] कहत सकुचानीजी॥२॥
दोहा–कोमल श्यामल अंग लखि, कोटिक कामलजाय॥
अंग अंग भूषण छबी, नटवर भेष बनाय॥
चौबोला–नटवर भेष बनाय शीशपर शिखी[3] शिखंड सुहायेजी॥
विच बिच मुक्ता[4] मणिन गुंथाये अति छबि कहत न आयेजी॥
जलजमाल[5] बनमाल सुहाई कुंडल अति छबि छायेजी॥
कटि पटपीत काछनी काछे ललित शृँगार बनायेजी॥ १॥
मणिन जटित नूपुर अति नीके चरण कमल छबि छाईजी॥
रवि शशि आदिक द्युतिधर जेते नख उपमा नाहिं पाईजी॥
अति अद्भुत लावण्य निधि श्री वृंदावन सुखदाईजी॥
निगम नेति किमि बरनियेताई रसिक नवल कन्हाईजी॥ २॥
दोहा–ब्रह्म पूरणानन्द हरि, जेहिं गावत श्रुतिचार॥
वृंदावन रसरास पति, सो पूरण अवतार॥
चौबोला–सो पूरण अवतार धाम बन देखि श्याम सुखदाईजी॥
तैसिय शरद रैन अति सुन्दर लखि मन रहत लुभाईजी॥
प्रफुलित कुमुदिन वन चहुँ पासा ललित मालती छाईजी॥
तैसोइ पूरण शशि छबि छायो यमुना पुलिन सुहाईजी॥ १॥
तैसिय जग मग ज्योति द्रुमनकी सुमन सुगंध सुहाईजी॥
लखि बन सुख समुदाय कन्हाई हरषरास रुचि आईजी॥
ललित योगमाया सों मुरली तब कर लई कन्हाईजी॥
नाद ब्रह्मकी उत्पतिजासों निगम अगम उपजाईजी॥ २॥
दोहा–विश्वविमोहन मंत्रसी, हरि मुख लसाति सुहाइ॥
सकल गुणनमें आगरी, रागरंग उपजाइ॥
चौबोला–राग रंग उपजाइ ताहि हरि अधरनराखि बजाईजी॥

१ अपरिमाण। २ वाणी। ३ मोरपक्ष। ४ मोती। ५ कमलके फूलोंकी माला।

त्रिभुवन मन मोहन ध्वनिलाई किये सकल वशमाईजी ॥
धरणि पताल जीव सब मोहे नभ सुरगण समुदाईजी ॥
चकित चंद मृग मारग भूले अमृत अमी बरसाईजी ॥ १ ॥
शिव विरंचि सनकादि मुनी सब ब्रह्म समाधि भुलाईजी ॥
भये नाद मुरली मगन तब चकित श्रवण रहे लाईजी ॥
सीद्धरु चारण अरु गंधर्वा रहे ध्यान विसराईजी ॥
सुनि मुरली मोहनकी सबके तन सुधिरहिय नं राईजी ॥ २ ॥

दोहा–सुनि मुरली नंदनन्दकी, तन सुधि रही नमूल ॥
रह्यो प्रवाह जलनदिनको, पवन गवन गईभूल ॥

चौबोला–पवन गवन गईभूल मोरसब नाचतअतिछविछावैजी
थकित विलोकत मृग सब ठाढे मुरली ध्वनि मनभावैजी ॥
रहीं धेनु तृण गणि मुखवत्सहु दूधपिवन नहिं पावैजी ॥
रहे थकित सुनि ध्वनि अहि जहां तहां इतउतकहुंनहिंजावैजी १
तरुवेली सब चंचल पाता नव अंकुर दल आयेजी ॥
नाग सकल सोवत ते जागे शेषनाग अकुलायेजी ॥
जड चेतन गति भइ विपरीता सुनि मुरली सुख पायेजी ॥
जो नरनारि तिहूँ पुर मांई तनुसुधि सब विसरायेजी ॥ २ ॥

दोहा–मुरलीकी ध्वनि सुनतही, चकित भई सबनारि ॥
सब सुधि भूली देहकी, जे ब्रज गोप कुमारि ॥

चौ०–जे ब्रज गोप कुमारि मुरलिया सुनि अरु सबनरनारिजी ॥
यथा भाव सबहिनको दरशी भये विवश सबभारीजी ॥
यारसकी तेई अधिकारिणि नँदनंदनकी प्यारीजी ॥
सुनतहि बौरीसी भई सब तनकी सुरत विसारीजी ॥ १ ॥
मुरलीकी ध्वनि कानपरी सो लगि मानु शीश ठगोरीजी ॥
रह्यो न उरमें धीर सबहिके बाजी कहि उठ दोरीजी ॥

सुनि मुरली ब्रजकी तरुणिन तब सब अकुलानी गोरीजी ॥
षटदश सहस गोपिकाते सब सुनि मुरलीभई भोरीजी ॥ २ ॥
दाहो-गृह कारज विसराय सब, विततानी ब्रजनारि ॥
कोऊ धरणि अकाशकोउ, रहीं सकल निहारि॥
चौबोला-रहीं सकल निहारि कोउ निज मनहीं माहिं उपाईजी
लैले तिनके नाम बजाई सबहिन श्याम बुलाईजी ॥
रहि न सकीं ध्वनि सुनि अकुलाई जो जैसे उठधाईजी ॥
चलीं सकल गृह काज तज्यो अरु लोक लाज विसराईजी ॥१॥
कोऊ दूध उफनतो तजि कोउ दधि न जमावन पाईजी ॥
कोऊ करत रसोंई तजि कोउ पतिहि जिमावत धाईजी ॥
बालक गोद संभार न लीनो दूध पिवत तजि आईजी ॥
उलटे भूषण वसन साजि सब सो तिनको सुधि नाईजी ॥ २ ॥
दोहा-नूपुर धारे भुजन सों, किंकिणि लइ गरडार ॥
बांधे बाजूबंद पग, करन लपेटति हार ॥
चौबोला-करन लपेटतिहार शीशके फूल श्रवण सों धारीजी ॥
करणफूलले शीश सँवारे सो कछु नाहिं विचारीजी ॥
चलीं सकल सुनतहि मुरली ध्वनि भ्रमते ब्रजकी नारीजी ॥
अंजन करि दृग एक रह्यो इक बिन अंजनहिं सुधारीजी ॥१॥
भई बिवस ध्वनि सुनि मुरलीकी रही न सुधि तनु माईजी ॥
मुरली सों हरि टेर बुलाई प्रीति विवस उठ धाईजी ॥
मुरली ध्वनि मारग गहि लीनों और न कछु भय लाईजी ॥
प्रेम स्वरूप सकल ब्रज नारी पंच भूतमें नाईजी ॥ २ ॥
दोहा-रोकि रहे पति मात पितु, सुनति नहीं कोउ सोइ ॥
चलीं ध्यान धरि श्याम उर, गृह बन रुकी न कोइ॥
चौबोला-गृह बन रुकी न कोइ कोउ जो कर्म प्रारब्ध बसाईजी॥

राखी रोक पतिहि गृह माईं जानदई सोनाईजी॥
भयो विरह दुख अतिही कोटिन जन्म कर्म फल ताईजी॥
पुनि धरि ध्यान हरिहि उर लाई कोटि स्वर्ग फल पाईजी॥१॥
यों करि भोग त्याग तनु बाला मिली श्यामसों जाईजी॥
इहि विधि बन सब चलीं किशोरी लोक लाज विसराईजी॥
जरत भवन तजियतहै जैसे अति आतुर उठ धाईजी॥
ढुंडन चलीं श्यामपै बाला निज तनु सुरत भुलाईजी॥२॥

दोहा–गृह गुरुजन तजि लाज तजि, ब्रज सुन्दरि समुदाय॥
मुरली ध्वनि सुनि रंगिली, मिलीं श्याम बन जाय॥

चौ॰-मिलीं श्याम बन जाय सकल तहां सुन्दर कुँवर कन्हाईजी
नटवर बपु गोपाल अधरपर मुरली राखि बजाईजी॥
सन्मुख सब ब्रजबाल देखि हरि रहे मनाईं सुखपाईजी॥
ब्रज युवती लखि कुँवर कन्हाई आनँद उर न समाईजी॥१॥
कनक वरन शशि मुख सब बाला पहुँची बन समुदाईजी॥
भईं जाय सन्मुख सब ठाढीं अति छबि कहत नआईजी॥
अटपट तनु शृंगार विलोकी रहे हरि मन सुख पाईजी॥
अद्भुत रूप देखि सुख पायो मनहीं माहिं कन्हाईजी॥२॥

दोहा–अति आदर करि श्याम तब, कहत मंद मुसकाय॥
कहो अहो तिय ब्रज कुशल, निशि काहे बन आइ॥

चौ-निशि काहे बन आइ ऐसो तुम कहा काज मन लाईजी॥
अर्धरात कछु डर नहिं कीनो यावनमें किमि आईजी॥
यह कछु भली करी तुम नाहीं निज पति तजि बन धाईजी॥
वेद पंथ निदरयो तुम भारी अजहुँ जाहु घर माईजी॥१॥
यह सुनिकै गुरुजन दुख पैहैं लरिहैं वे सब जोईजी॥
बहुरो तुमको त्रास दिखैहैं सहिहो पुनि तुम सोईजी॥

निज पति तजि पर पतिहि भजैसो तिय कुलीन नहिं होईजी ॥
मरे नरक जीवतहु जगतमें भली कहत नहिं कोईजी ॥ २ ॥
दोहा—कहत वेद हमहूँ कहत, युवतिनको पति देव ॥
जो तुम चाहो सुख लह्यो, करहु तिनहिंकी सेव ॥
चौ०—करहु तिनहिंकी सेव और कछु मन धोखो जिन आनोजी॥
करहु सेव पतिकी अति हित करि पतिहि देव करि जानोजी ॥
तजिकै कपट करहु पतिसेवा वेद वचन परमानोजी ॥
बुद्धि कुबुद्धि कुरूप वियोगी क्रूर कुपूत अयानोजी ॥ १ ॥
ऐसेहू पतिको तिय त्यागे होत दोष अति भारीजी ॥
ताते मानहुँ बात हमारी जाहु घरन ब्रजनारीजी ॥
माता पिता तुम्हर धौं नाई ऐसे कहत मुरारीजी ॥
कै तुमको यहां उनहिं पठाई कै यह बुद्धि तुम्हारीजी ॥ २ ॥
दोहा—कैधोंकहि आई उन्हें, कैं वे जानत नाहिं ॥
नव यौवन सुकुमारि तुम, निशिवसिहो वनमाहिं ॥
चौबोला—निशि वसिहो वनमाहिं बात यह जो कोऊ सुनिपाईजी
हमें तुम्हें दूषण दोऊ दिश देहैं सब ब्रजमाईजी ॥
अब ऐसी करियो मति कबहूं जैसे अब उठधाईजी ॥
ऐसे सबसों कहत कन्हाई बार बार भरमाईजी ॥ १ ॥
निठुर वचन सुनि श्याम सुन्दरके युवति उठीं अकुलाईजी ॥
चकित भईं मन गुनंतरहीं सब कहत न मुख कछु आईजी ॥
जनु तुषार परयो कमलन पर वदन गये मुरझाईजी ॥
पाई निधि खोई पुनि जानो सोच रही शिर नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—चित्र पूतरीसी रहीं, विरह विकल सब वाम ॥
प्रेम विवस जान्यों नहीं, कपट खेल कियो श्याम ॥

१ मुरदैत्यकेशत्रु-श्रीकृष्ण । २ विचार ।

चौ०-कपट खेलकियोश्याम मनहिंमन हँसतश्यामसुखदानीजी॥
भई विरह व्याकुल ब्रजबाला रहीं सोच उरआनीजी॥
सहि नहिं सकी दुसह यह पीरा बोलीं सकल सयानीजी॥
सुनहु श्याम सुन्दर सुखदानी जिनहिं कहो यह बानीजी॥ १॥
यह जिन कहो नाहिं तुम लायक अहो श्याम सुखदाईजी॥
कोमल सुभग कमल मुखताते बातें कटुक सुनाईजी॥
धर्म सिखावत हो अब हमको लैलै नाम बुलाईजी॥
करहु हेतु जिहिं भांति बुलाई छांडि देहु चतुराईजी॥ २॥
दोहा-कर्म धर्म जानत नहीं, हम सब ब्रजकी नारि॥
चरण कमल अनुराग करि, लोक लाज दइडारि॥
चौबोला--लोकलाज दइडारि तुम्हारे चरण कमल चितलाईजी॥
सकल धर्ममय चरण तिहारे वसत सो हम उरमाईजी॥
कहवावत हो अंतर्यामी समुझत क्यों न कन्हाईजी॥
सुनहु श्याम सुखधाम हरी अब तुमहिं उचित यह नाईजी॥१॥
मन हमरो अपनाय कन्हाई कहा बात यह ठानीजी॥
पाप पुण्य कहा होय नाथ जो सो हम कछुय न मानीजी॥
अधरामृतके लोभलागि हम तुमरे हाथ बिकानीजी॥
सकल धर्मकी मोहनहारी तुमरी मुरली जानीजी॥ २॥
दोहा-ऐसीको ब्रजमें तियः, जो न मोहिं सुनियाइ॥
जैसी यह मुरली जिने, विधि मर्याद मिटाइ॥
चौबोला-विधि मर्याद मिटाइ आपनी रीत प्रगट करियानेजी॥
अब तो मृदुमुसकन मन मोहे पाप पुण्य नहिं जानेजी॥
हम तो पति इक तुमको जाने धृक जो दूजो मानेजी॥
तुम तजि हमें और प्रिय नाई मन नहिं मानत आनेजी॥ १॥
कोटि करो अब भवन न जैहें सुनहु श्याम सुखदाईजी॥

जानत हो सब अन्तर्यामी मानत हो क्यों नाईजी ॥
मन वच कर्म तुम्हारी दासी मृदु मुसकनमन भाईजी ॥
जरत सकल विरहानल ज्वाला सींचहु अधर सुधाईजी ॥ २ ॥

दोहा—दीन कृपानिधनाम तुम, करहु कृपा यह जानि ॥
हमते दीन न और कोउ, देहु दान मुसकानि ॥

चौबोला—देहु दान मुसकानि विरह दुख मेटहु कृपानिधानाजी॥
जो नहिं मानत विनय हमारी तो तजिहैं यह प्रानाजी ॥
विरह विकल गोपिकन लखि हरि कृपासिंधु भगवानाजी ॥
उमँगि उठे दृग भरि लिये तब दीन वचन सुन कानाजी ॥१॥
धनि धनि धनि ब्रजबाल कहत हरि मनहीं मन नँदलालेजी ॥
बोले दुहुँ कर जोरि कृपानिध सदय हृदय गोपालेजी ॥
अपनी प्रभुता डारि कहत हरि धन्य धन्य ब्रजबालेजी ॥
तुम सन्मुख मैं विमुख तुम्हारो ऐसे कहत दयालेजी ॥ २ ॥

दोहा—मैं निर्दय बहु वचन कहे, तुम जिय एक न आनि ॥
मोकारण गृह कुटुंब तजि, छांडि दई कुलकानि ॥

चौ०—छाँडि दई कुलकानि धन्य धनि धनि यहप्रीति तुम्हारीजी
मन वच क्रम मोसों अनुरागी धन्य धन्य ब्रजनारीजी ॥
यों कहि विहँसि श्याम बनवारी अंकम भर लइ सारीजी ॥
यदपि अकाम सदा सुखराशी तदपि भये हितकारीजी ॥१॥
एकहि बार युवति सब भेटी विरहाताप विसारीजी ॥
कह्यो सबनसों तब मनमोहन करहु राससुखकारीजी ॥
कृपादृष्टि अवलोकत नैनन हँसि हँसिके गिरिधारीजी ॥
चहुँ दिश हर्ष भई सब ग्वारी मध्य श्याम बनवारीजी ॥ २ ॥

दोहा—बन विहार विहरत हरी, नवल नवलि बहुरंग ॥
हँसत करत बहुरस चरित, युवतिं वृन्द लियेसंग ॥

चौबोला–युवति वृन्द लिये संग गये तब यमुना तट सुखदाईजी
सोहाति अति कमनीय कोमलः उज्ज्वलरेत सुहाईजी ॥
करी परम रमणीय यमुन निज अपने पाणि बनाईजी ॥
वहतसमीर त्रिविध सुखदाई कुसुमधूरि छवि छाईजी ॥ १ ॥
उडत सुगंध लपट चहुँओरी गुंजत भँवरन वृन्दाजी ॥
कोटिकामसम नाहिं हरीसो बैठे तहां सुखकन्दाजी ॥
करत विलास हासरस लीला नवल छैल ब्रजचन्दाजी ॥
परिरंभन चुंबन कुचपरसन हिये हुलास अनन्दाजी ॥ २ ॥

दोहा–काम भाव सब गोपिकन, हरिसों प्रीति लगाइ ॥
सो इच्छा पूरण करी, करी सबन मन भाइ ॥

चौ०–करी सबन मन भाइ हरी तव यों रस प्रेम बढावैजी ॥
अति मन हरषि कन्हाइ बहुरि रस रास रंग उपजावैजी ॥
सुनि पिय वचन सकल अनुरागीं भूषण वसन सजावैजी ॥
लखि उलटे भूषण सकुचाई निरखि सकल मुसकावैजी ॥ १ ॥
नव सत साज भई सब ठाढी अति आनँद मनमाईजी ॥
कोटि कल्पतरु सम सुख रूपा बंसीबट छवि छाईजी ॥
तहां रच्यो रस रास कन्हाई सखिन सहित सुखदाईजी ॥
भई भूमि कपूर मय सब कुमकुम वरषि सिचाईजी ॥ २ ॥

दोहा–रचीरास मंडल विधिः, तहँ श्रीकुँवर कन्हाइ ॥
कापै वरनी जाय छवि, शारद कहत लजाइ ॥

चौबोला–शारद कहत लजाइ रासविधि वरनतमें नहिं आईजी
एक एक युवातिनके विचविच हरि निज छवि प्रगटाईजी ॥
मध्य जोरी रासनायक राधा कुँवर कन्हाईजी ॥
एक रूप अनेक वपुधरि सबन वीच छवि छाईजी ॥ १ ॥
प्रगट करी यह लीला हरि सो जानत कोऊ नाईजी ॥

भई मंडल जोर ठाढी मुख छबि बरनि न जाईजी ॥
सहस बत्तीसहि उदित मानो घन दामिनि छबि छाईजी ॥
तेही अवसर नारिन सहितहिं आये सुर समुदाईजी ॥ २ ॥
दोहा–हरषि हरषि बरषित सुमन, देखत चढ़े विमान ॥
कहत धन्य ब्रजनारिये, करत मुदित मन गान ॥
चौबोला–करत मुदित मन गान सुरनगण आनँद उर न समावैजी
निरखत ब्रज सुन्दर छबि छावे अति मन हरष बढावेजी ॥
नूपुर कंकण किंकिणि वाजे मुरली मधुर सुहावेजी ॥
सुर मंडल सारंग उपंगा ताल मृदंग बजावेजी ॥ १ ॥
तंत्र अनेक विविध गति साजे मिले एक सुर तालेजी ॥
निर्तत पिय संग चंचल बाला मनुघन दामिनि जालेजी ॥
बिच बिच श्याम बीच ब्रज गोरी सो छबि परम विसालेजी ॥
शुभगतमाल तरुण नँदलाला कनकलता ब्रजबालेजी ॥ २ ॥
दोहा–करसों कर जोरे सुभग, अति छबि परम विसाल ॥
मानहु वृंदावन हृदय, रास मंडलकी माल ॥
चौबोला–रास मंडलकी माल हरी ब्रजनारिन संग सुहावेजी ॥
कोटि काम रतिको मन मोहे सो पटतर नहिं पावेजी ॥
लटकन मुकुट लटक घूंघटकी मटक चलन छबि छावेजी ॥
जनु घन दामिनि निरख बरूथा नचत मोर हरषावेजी ॥ १ ॥
नाचत मानहु मोर यूथनः मुकुट लटक छबि छाईजी ॥
नचत गति ले नागरिन संग श्याम सुन्दर सुखदाईजी ॥
धरणि पग पटकत झटककर अरु भौंहैं मटक सुहाईजी ॥
गीव लाचानि हलनि कुंडल कर फेरन मन भाईजी ॥ २ ॥
दोहा–मुक्तमाल शुभ कंठ मणिं, अरु बनमाल सुहाइ ॥
बदन कमल अलकन छबी, कापै वरणी जाय ॥

चौबोला—कापै वरणी जाइ काछनी कटि पटपीत सुहायेजी ॥
मलय चित्रित बाहु भूषण श्याम तन मन भायेजी ॥
लखत छवि नँदलाल तियनकी विविध शृँगार बनायेजी ॥
सुभग पाटी मांग मुक्ता शीश फूल छवि छायेजी ॥ १ ॥
जटित माल जराउ बेंदी भौंहैं वंक निकाईजी ॥
ललित बेसर नाक अंजन नैनानि अति छबिछाईजी ॥
अधर दशन कपोल चिबुक भूषण कंठ सुहाईजी ॥
करत रास विलास अद्भुत हरत मन सुखदाईजी ॥ २ ॥

दोहा—कबहुँ ललित गति ले चलत, नवल सुघर नँदनन्द ॥
निरखि हरषि तैसेइ चलत, नवल नागरी वृन्द ॥

चौबोला—नवल नागरी वृन्द विचक्षण नूतन गति ले सारीजी॥
रीझरसिक घनश्याम कन्हाई तापर तन मन वारीजी ॥
निर्तत अरस परस पिय प्यारी बोलति सखि बलिहारीजी ॥
कोउ संगीत कलागुण धारी कोउ लावति सतकारीजी ॥ १ ॥
कोउ कल ध्वनि पियके गुण गावै कोउ नव भाव बतावैजी ॥
सुघर एकते एक प्रवीना ताल भेद गति गावैजी ॥
जब थेई ताथेई थेइ बोलै बिनहीं मोल बिकावैजी ॥
तान तरंग रंग उपजावै अति सुख रस बरसावैजी ॥ २ ॥

दोहा—कोउ मुरलीकर छीनलै, आप बजावति बाम ॥
कोउ पिय संग मिल गावही, काउ बुलावत श्याम ॥

चौ०-काउ बुलावत श्याम तजत पुनि मुख चुंबन कर ताईजी॥
काउअ श्याम लेत भुज भरिकै सो छवि बरनि न जाईजी ॥
रमत रास पिव संग छवीली रही प्रेम रस छाईजी ॥
रास रस पिय संग करत सब रंगी रंग रस माईजी ॥ १ ॥
निरखत देव सुमन बरसावैं अति हरषित मनमाईजी ॥

धन्य धन्य ब्रज धनि ब्रजबाला धनि धनि विपिन सुहाईजी ॥
करत रास विलास पूरण ब्रह्म तहां निज आईजी ॥
शंभु अज सनकादि नारद मुदित रहे गुण गाईजी ॥ २ ॥
दोहा–निरखत श्यामा श्याम छबि; ब्रह्म सुखहि विसराय ॥
देव नारि विसारि पाति, करत सकल मन चाय ॥
चौबोला–करत सकल मन चाय विधाता हम न भई ब्रज माईजी॥
कहा भयो जो उरध बसी अरु अमर पदवी पाईजी ॥
निरखि सुख सब ब्रज तियनको सुर नर नारि सिहाईजी ॥
करत सुख ब्रज नारि हरि सँग तीन लोक सो नाईजी ॥ १ ॥
कहति यह वरदेहु विधना विनवत बारहि बारीजी ॥
होयँ दासी ब्रज तियनकी कृष्ण पद हितकारीजी ॥
धनि धनि कहत सुमन बरसावैं मुदित सकल सुरनारीजी ॥
धनि मोहन धनि राधाप्यारी धनि ब्रजगोप कुमारीजी ॥ २ ॥
दोहा–धनि सुन्दरता धन्य सुख, धनि धनि रास विलास ॥
सुर ललना विथकी कहत, धनि वृन्दाबन वास ॥
चौबोला–धनि वृन्दाबन बास धन्य धनि धनिये ब्रजकी नारीजी
रमत रास रस गोप कुमारी नन्द नँदनकी प्यारीजी ॥
हाव भाव करि पियहि रिझावे करत गान अति भारीजी ॥
सहज वचन जिनके मन भाये राग रागिनी सारीजी ॥ १ ॥
सहज रूप निधि नवल किशोरी निर्तत अति छवि छाईजी ॥
पग महि पटक भुजन लटकाई फंदा अनुप बनाईजी ॥
निरखि लेत उपजत छवि भारी रीझत कुँवर कन्हाईजी ॥
वेनी छूटि अलक बनराई लट वेसर उर झाईजी ॥ २ ॥
दोहा–श्रम जल विन्दू वदनपर, मनहुँ सुधा शशि छाइ ॥
फिरत सबनके सँगहि सँग, अति वश होत कन्हाइ ॥

चौबोला—अति वश होत कन्हाइ एकही रूप सबन दरशायोजी॥
नारि नारि प्रति रूप प्रगट कियो काउअ सो न जनायोजी॥
अद्भुत कौतुक प्रगट दिखायो कियो सबन मन भायोजी॥
रूप प्रेम गुण परम उजागरि निर्त थकी श्रम पायोजी॥१॥
निर्तत थकित भई सब तरुणी भरी रूप गुण माईजी॥
देखत श्याम नागरिनको तब लेत उमगि उर लाईजी॥
टूटे हार गिरत सो उरते हरिको देत जनाईजी॥
लेत बीचही तिन्हें हरी गहि मही परन नहिं पाईजी॥२॥

दोहा—श्रम जल पोंछत पीत पट,अति हित कुँवर कन्हाइ॥
वेसरसों उरझीलटें, कर कमलन सुरझाय॥

चौ०-कर कमलन सुरझाय देखि हरि विह्वल ब्रजकी नारीजी॥
कहि २ वचन मृदू हरि सब सों करन श्रमहिं निवारीजी॥
ऐसी विधि ब्रजकी नारिनको देत सुखहि गिरिधारीजी॥
देखे पति स्वाधीन मनहिं सब भईं गर्विता सारीजी॥१॥
परम प्रेमकी खानि सुन्दरी रूप गुणन अधिकाईजी॥
क्यों न करैं अभिमान जान मन निज वश त्रिभुवन राईजी॥
हम सम अरु युवती कोउ नाईं कहत भईं मन माईजी॥
अब गिरिधर हम वश करि पाये करिहैं हम मन भाईजी॥२॥

दोहा—अब गिरिधर हम वश किये,कहति मनहिं मन बाम॥
कहैं जो हम सोई करहिं, वशहि भये घनश्याम॥

चौबोला—वशहि भये घनश्याम हरी अब न्यारे है हैं नाईजी॥
रहिहैं सदा समीप हमारे सुन्दर कुँवर कन्हाईजी॥
जो हम करिहैं सो हरि करि हैं यह गोपिन मन आईजी॥
सदा हमारे संग विचरिहैं करिहैं मनकी भाईजी॥१॥
कोउ पिय अंग भुजनको दीने कहति वचन गरबाईजी॥

सुनो श्याम मैं अति श्रम पायो अब नहिं गायो जाईजी ॥
एक कहति ममपाँय पिराने नृत्य न होत कन्हाईजी ॥
एक कंठ भुजमें खिसयानी लटकि कहति कछु नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–किये भाव बहुगर्वके, ऐसे सब ब्रजनारि ॥
अंतर्यामी देखि सब, जान लिये बनवारि ॥
चौबोला–जानलिये बनवारि गर्व मन देखि रहे मुसकाईजी ॥
मैं अवगति मोको नहिं जाने यों मन कहत कन्हाईजी ॥
करत सदा भक्तन मन भाई गर्व न नेक सुहाईजी ॥
सो युवतिनके मनमें जान्यो दूर करन मन आईजी ॥ १ ॥
प्रेम अभूषण कनक समाना मलिन गर्विता आईजी ॥
विरह अग्नितायें बिनताई निर्मल होय सो नाईजी ॥
ले वृषभानु कुमारि संग हरि यह विचार ठहराईजी ॥
विहारन प्रभु तजि सखियन है गये अन्तर्ध्यान कन्हाईजी ॥२॥

अथ अन्तर्ध्यान लीला ॥

दोहा–प्रेम बढावनहित हरी, अन्तर रहे दुराय ॥
गोपिन हरि देखे नहीं, चकित भई समुदाय ॥
चौ०–चकित भई समुदाय कहति इक कित गये कुँवर कन्हाईजी
उठीं सकल जहां तहां अकुलाई भई विकल छिनमाईजी ॥
पाय महाधन मनहुँ गमायो भेद कछू नहिं पाईजी ॥
खोजति जहां तहां दृष्टि पसारे अति आतुर चहुँ धाईजी ॥१॥
तब सब जान लई यह हरिको लेगई राधा प्यारीजी ॥
कछु हरषित कछु रिस उरमाई देन लगीं रस गारीजी ॥
करत सदा दुबिधा ये हम सों भरे कपट दोउभारीजी ॥
जान कहां हमते बनपैहैं खोजहिं कुंजन सारीजी ॥ २ ॥

१ सब । २ चौकन्ना । ३ दुःखित ।

दोहा—चलीं बनहिं ढूंढन सकल, जहां तहां फिरत अधीर॥
चरण चिह्न खोजाति कोऊ, बन कोउ यमुनातीर॥
चौबोला-बन कोउ यमुनातीर लखति सब विरहातुर ब्रजबालैजी
भई विकल पावत कहुँ नाई खोजति सब नँदलालैजी॥
नेक दुरे बन कुँवर कन्हाई यदपि कियो यह ख्यालैजी॥
बिन देखे मोहन युवती सब तदपि भई बेहालैजी॥ १॥
पलकांतर विधिको दिन तिनको बन अंतर दुखभारीजी॥
भई विरह व्याकुल चित जबहीं हरि पद चिह्न निहारीजी॥
कुलिश कमल ध्वज अंकुश जामें निरखि रहीं ब्रजनारीजी॥
निकट चिह्न प्यारी चरणनके अरुण कमल शुभकारीजी॥ २॥
दोहा—लगीं करन वन्दन रजहि, याचत शिव विधिताय॥
कछुक धीर उर में भयो, खोजति तिहिं मगजाय॥
चौबोला-खोजति तिहिं मग जाय सखी सब ढूंढरहीं बनजाईजी॥
कुँवर कान्ह प्यारी सँगलीन्हे फिरत कुंज बनमाईजी॥
कबहुँ कुसुम वनमाल बनाई प्यारी उर पहराईजी॥
कबहूं सुमन सँवारत वेणी सुभग परम छबि छाईजी॥ १॥
कबहुँ सरोज सुगंध सुंघावै करि करि नाना भावैजी॥
नागर मन अभिलाष बढावैं लखि नागरि सुखपावैजी॥
कंठ कंठ मिल दोउ भुज जोरैं घन दामिनि छबि छावैजी॥
अति वश भये श्याम प्यारीके जित जावै तितधावैजी॥ २॥
दोहा—पतिहित लखि अनुकूल अति, हरषि लाडिली हीय॥
ताते उपज्यो गर्व मन, मैं अति प्यारीपीय॥
चौबोला-मैं अति प्यारी पीय लाडिली मनहीं मन गरबाईजी॥
एक प्राण कहिये द्वै देही तहां गर्व कहां पाईजी॥
देह धरेको भाव जु येही यामें संशय नाईजी॥

तब प्यारीके मन यह आई मेरे वशहि कन्हाईजी ॥ १ ॥
मेरे हित बाँसुरी बजाई सब ब्रजनारि बुलाईजी ॥
मेरे हित रसरास उपायो सब तजि मुहि सँगलाईजी ॥
मोसम सुन्दर चतुर उजागर और नारि कोउ नाईजी ॥
ऐसे गुणति मनहिं मन चलत न ठठकि रही मगमाईजी ॥ २ ॥

दोहा—बाँह गहत नँदलालकी, बैठि जात मगमाइ ॥
कहति अहो मोहन पिय, मेरे पाँय पिराइ ॥

चौबोला—मेरे पाँय पिराइ चलन तुम कहत हो जहां कन्हाईजी ॥
मोपै पग न चल्यो नाहिं जाई नृत्य करत श्रम पाईजी ॥
ताते पग नहिंजात उठायो सुनहु श्याम सुखदाईजी ॥
ऐसे वचन कहति हँसि पिय सों कंधेंलेहु चढ़ाईजी ॥ १ ॥
गर्व भरे मुख वचन सुने तब रहे श्याम मुसुकाईजी ॥
अंतर्ध्यान भये हरि तबहीं गर्व जहां मैं नाईजी ॥
तुरतहि विकल भई अति प्यारी देखत दुरे कन्हाईजी ॥
कितहि गये हरि भाजि सुखदाई चकित भईमनमाईजी ॥

लावनी।

तब चकित भई मनमाहिं लाडिली प्यारी ॥
भूलीं सब तनकी दिशा सोच अति भारी ॥

टेक—मैं कीनों मन अभिमान बात यह ठानी ॥
तबहीं मोकों तजिगये श्याम सुखदानी ॥
वेहैं पिय परम सुजान मनहिं की जानी ॥
निज करनीको मन समुझि अधिक पछितानी ॥
रहि विरह बिकल अकुलाय रोवति सुकुमारी ॥
भूलीं सब तनकी दिशा सोच अतिभारी ॥ १ ॥

नैनन सलिल रहि ढारि भिजत तन सारी ॥
अरु पिय पिय बारमबारहि कहत पुकारी ॥
हाहा मम नाथ न करो अनाथ मुरारी ॥
दीजै अब दरशन आय वेग गिरिधारी ॥
यह चूक परी बोली नाहिं वचन सँभारी॥भूलींसब०२॥
यह दूषण चित निज धरो अहो सुखदाई ॥
अब क्षमा करो यह चूक लेहु अपनाई ॥
सुन खग मृग अरु द्रुम बेलि रोवत अकुलाई ॥
बन ढूंढति सब ब्रजनारि चली तहां आई ॥
लखि शशि मुख मानों घनतेदामिनिन्यारी।भूलींसब०३
दूरेते तिन लखि लई राधिका प्यारी ॥
देखी अति व्याकुल चित्त विरह दुखभारी ॥
जित तितते धाई शीघ्र सकल ब्रजनारी ॥
उरलाई हित करि सब मिल ताहि निहारी ॥
कहा भयो तोहिंरी बूझति बारहि बारी ॥
भूलींसब तनकी दिशा सोच अति भारी ॥ ४ ॥

दोहा—बारबार बूझति सबै, कहाँ गये गोपाल ॥
मुखते वचन न आवही, मुर्छे परीं बेहाल ॥

चौबोला—मुर्छे परी बेहाल देखि सब ब्रजनारी पछि ताईजी ॥
बैठारी अंकम गहि प्यारी बूझति सब अकुलाईजी ॥
कहि राधा बोलति क्यों नाई काहे तू मुरझाईजी ॥
कहां गये तजि तोहिं कन्हाई कैसे तू इत आईजी ॥ १ ॥
कोउ अंचरते पोंछति पलकैं काउन अलक सँवारीजी ॥
नैन नीर कछु सुधि नहिं देही आति व्याकुल सुकुमारीजी ॥
चलिहैं तोहिं तहाँले प्यारी जहाँ श्याम गिरिधारीजी ॥

विरह मोहनिद्राते जागी सुनत नाम बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–जान्यो मन आये हरी, धाय मिलो अब श्याम ॥
नैन उघारे मिलनको, तहाँ देखि ब्रजवाम ॥
चौबोला-तहाँ देखि ब्रजवाम अधिकही उठी बहुरि बिलखाईजी॥
कहति मोहिं त्यागी नँदनंदन तुमहिं न मिले कन्हाईजी ॥
नहिं उनकी महिमा कछु जानी करि मन गर्व भुलाईजी ॥
बोली पियसों मंदमती मैं अति अभिमान बढ़ाईजी ॥ १ ॥
लीजै कंध चढाय मोहिं पिय मोपै चल्यो नजाईजी ॥
वे पिय परम सुजान कह्यो मुहि चढहु कंध तुम आईजी ॥
ह्वै गये अंतर्ध्यान कन्हाई तबते रहि पछिताईजी ॥
गये श्याम धों कित बनमांई दृष्टि परे कहुँ नाईजी ॥ २ ॥
दोहा–भई विरह व्याकुल अती, रहीं नैन जल डारि ॥
कहति मोहिं त्यागी अली, याबनमें बनवारि ॥
चौबोला–याबनमें बनवारि तजी मुहिं कहति सखिन सों प्यारीजी
मुरछि परी पुनि धरणि मझारी श्याम विरह दुखभारीजी ॥
देखि दशा व्याकुल सब नारी कहति निठुर बनवारीजी ॥
त्रिया पुरुष सों मान ज़ुकरहीं पुरुष न उर कछु धारीजी ॥ २ ॥
देखहु श्याम तजी हम कैसे कहा मन माहिं विचारीजी ॥
मिलि हैं श्याम धीर धर प्यारी कहति सकल ब्रजनारीजी ॥
चलीं आप खोजन सब बनमें तनकी सुरत बिसारीजी ॥
अहो रास पति कुंज बिहारी टेरति घोष कुमारीजी ॥ २ ॥
दोहा–जात प्राण तजितन अबै, तुम बिन मोहनलाल ॥
कहाँ दुरे पिय भाजिकै, कहति सकल ब्रजबाल॥
चौ०-कहति सकल ब्रजबाल क्षमो अब प्रभु यह चूक हमारीजी
मिलहु कृपा करि वेग मुरारी देहु दरश सुखकारीजी ॥

क्षण क्षण कल्प समान विहाई तुम बिन श्रीगिरिधारीजी ॥
जरत सकल बिन तुमहिं निहारे विरह अग्नि ब्रजनारीजी ॥ १॥
मंद मधुर मुसकान सुधारस बरषि बुझावहु आईजी ॥
गावत तुमको वेद पुराना सकल विश्व सुखदाईजी ॥
हम दासी प्रभु तुम चरणनकी तुम्हरे हाथ बिकाईजी ॥
गरल अनल जलते रख लीनी जहँ तहँ करी सहाईजी ॥ २ ॥

दोहा—निठुर होत हो कत हरिः, जरत विरह ब्रजबाल ॥
कत डोलत उघरे चरण, या बन में नँदलाल ॥

चौबोला—या बनमें नँदलाल गडहिं कहुं कुशकंटकहिं कन्हाईजी
ते कंटक शालत हैं जियमें तुम पद हम उरमाईजी ॥
सुख देके दुख देत मुरारी कहा नाथ जिय आईजी ॥
ऐसे कहति सकल बन डोले अलबल वचन सुनाईजी ॥ १ ॥
जड़ चेतन जानति कछु नाई अतिहिं गई अकुलाईजी ॥
बूझति बन विटपन सों धाई तुमहुँ लखे सुखदाईजी ॥
अहो कदमहीं अंब तमाला हमें हरि देहु बताईजी ॥
अहो जुही मालती माई लखे कहुं जात कन्हाईजी ॥ २ ॥

दोहा—चंपा श्रीफल रंभ तुम, देखे कुँवर कन्हाइ ॥
हे दाड़िम जामुन कहो, कहां श्याम सुखदाइ ॥

चौ०-कहां श्याम सुखदाइ कहो किन कहां सुखराशि कन्हाईजी
हे पलाश हम दासि तुम्हारी दीजे श्याम बताईजी ॥
हे पीपर हर पीर हमारी हे मन्दार सुहाईजी ॥
सुन्दर घन तन श्याम सलोने कहो कहां सुखदाईजी ॥ १ ॥
हे चंदन तुम हो उपकारी पिय घन श्याम बतावोजी ॥
हे अवनी चितचोर हमारे तुम जिन राखि छिपावोजी ॥
तुम ते दूर कहूं हरिनाई क्यों नहिं आनि मिलावोजी ॥

कहो कुंद मुकुंद कहां है नैनन हमहिं दिखावोजी ॥ २ ॥
दोहा—हे बट नट नागर हरी, कहां सो देहु बताय ॥
मानेंगी उपकार हम, बूझति हाहाखाय ॥
चौबोला—बूझति हाहाखाय देखियत दृष्टि तिहारी भारीजी ॥
लखे कहूं तुम जात मुरारी कमलनैन गिरिधारीजी ॥
हे दुखदमन परम सुखकारी गति सर्वत्र तुम्हारीजी ॥
जहाँ होय बल वीर विहारी कहिये व्यथा हमारीजी ॥ १ ॥
हे तुलसी तुम तो सब जानो कहां श्याम सुखकारीजी ॥
क्यों नहिं हरि सों प्रगट बखानो दुख पावत ब्रजनारीजी ॥
तुम तो सदा श्यामकी प्यारी कहो किन दशा हमारीजी ॥
बोलत नहिं तरु कहति इनहुंको ले गये मन बनवारीजी ॥२॥
दोहा—इहि विधि वन घन ढूंढ सब, ब्रजतिय विरह उदास ॥
इत उतते आई पुनिः, कुँवरि राधिका पास ॥
चौबोला—कुँवरि राधिका पास बैठ सब भई विरह आधीनेजी ॥
अति व्याकुल तरफत परीं सब मनहुँ नीर विन मीनेजी ॥
श्याम विरह दुख भयो अतिहिं तब भई सब मनहिं मलीनेजी
व्याकुल कहति सकल ब्रजनारी श्याम दरश नहिं दीनेजी॥१॥
श्याम बिना कैसे सुख पावें कहा करें कित जाईजी ॥
जहाँ रसिकपिय रास रच्यो तहाँ बहुरि यमुन तट आईजी ॥
बैठीं सब राधा ढिंग बामा रहीं श्याम गुण गाईजी ॥
दृष्टि बन्द करि नटवर जैसे सबके ढिंग सुखदाईजी ॥ २ ॥
दोहा—हरि सबकी लीला लखें, युवतिन नाहिं लखाय ॥
देखि देखि सुखपात हरि, मन मन प्रीति बढ़ाय ॥
चौ०-मन मन प्रीति बढ़ाय करत हरि चरित विचित्र बिहारीजी॥
सदा श्याम भक्तन दुखहारी हरि जनके हितकारीजी ॥

विरह अग्नि तनगर्व जरायो निर्मल प्रेम भइ नारीजी ॥
गोपीजन सब हरिकी प्यारी नेक न हरिते न्यारीजी ॥ १ ॥
कहति श्याम ब्रज प्रगटे तबते देत सबन सुख भारीजी ॥
तिनमें हम सब उनकी दासी हमहिं तजी बनवारीजी ॥
व्याधहुते करनी कठिन यह हमते करी मुरारीजी ॥
नैन बजाय बुलाय सबन अब बधत मृगीलों नारीजी ॥ २ ॥
दोहा–यह मन गीध्यो माधुरी, मराति मसोसा खाय ॥
मोहन मुख देखे विना, कीजे कौन उपाय ॥
चौबोला–कीजै कौन उपाय हमारे मनहिं बसे बनवारीजी ॥
तब अति बालक हते मुरारी बालखेल किये भारीजी ॥
खेलतमें बहु असुर सँहारे दिये विघ्न सब टारीजी ॥
अद्भुत चरित मनोहर कीनों लीनो नख गिरिधारीजी ॥ १ ॥
हलधर सखन संग मुरलीधर चारन धेन पधारेजी ॥
तब हमको वीतत दिन जैसे जानत मनहिं हमारेजी ॥
कुंडल मुकुट केश घुँघुरारे शोभित दृग अनियाँरेजी ॥
वेन बजावत मधुर रसाला पीत वसन तन धारेजी ॥ २ ॥
दोहा–गौअन पाछे सखन सँग, सांझ समय जब आत ॥
चंदन चित्रित अंग लखि, जन्म सुफल करि पात ॥
चौ-जन्म सुफल करि पात ऐसी विध कथति सकल ब्रजनारीजी॥
समुझि सुमिर गुण कहत श्यामके रूप कथा विस्तारीजी ॥
उपजी उर आति प्रीति अनूपा तनुकी सुरति विसारीजी ॥
नहिं जानति हमको कित आई है गइ तन मयसारीजी ॥ १ ॥
भृंगीकीट समान लखावै मगन ध्यान रस माईजी ॥
भई आपही कृश तनु नारी सब सयान विसराईजी ॥

१ वधिक। २ मारत। ३ काजरको सान धरे। ४ दुर्बल।

लागीं करन चरित सब हरिके रह्यो प्रेम उरछाईजी ॥
ये लीला उनहींको सोहै तनकी सुरत भुलाईजी ॥ २ ॥
दोहा—एक भई दधि चोर इक, पकरि भुजाले आइ ॥
एक यशोमति वपुधरे, बांधति ऊखललाइ ॥
चौबो०—बांधति ऊखल लाइ एक अंबर करगिरिहि उठावैजी ॥
गाय गोप कहि सबन बुलावे लोचन एक मुँदावैजी ॥
मैं करिहौं दावानल मोचन ऐसे वचन सुनावैजी ॥
यमलाअर्जुन तरु इक भंजै एक बकाहि नशावैजी ॥ १ ॥
इक भइगाय एक गोपाला वैसेहि वचन सुनावैजी ॥
कारी धोरी धूमरि कहि कहि हटकत फिरत बुलावैजी ॥
एक वस्त्रको नाग बनावै तापर नृत्य सुहावैजी ॥
एक त्रिभंग ह्वै वेन बजावै दधिको दान चुकावैजी ॥ २ ॥
दोहा—अंतरनेकु रह्यो नहीं, भई श्याम ब्रज वाम ॥
तब अंतर नहिं करसके, भये निरंतर श्याम ॥
चौबोला—भये निरंतरश्याम तिनाहिं माधि प्रगटभयेतिहिंकालेजी
गोपीजन वल्लभ सुखदायक सुन्दर नैन विसालैजी ॥
प्रेम मगन तब अति आतुर उर लई कुँवरि नंदलालेजी ॥
देखि प्रगट दरशन गोपालै मिली धाय ब्रजबालैजी ॥ १ ॥
ज्यों धनराशि परीकहुँ पावै लोभी लूट न धावैजी ॥
एक मिलत ग्रीवादे वांहीं हरिको उरसों लावैजी ॥
कोऊ परी चरणपर आई कोऊ अंग लपटावैजी ॥
कोऊ गहि उर पंकज लावै विरहाताप नशावैजी ॥ २ ॥
दोहा—कोउ लटकी भुज सों रही, जनुतरुवेलि सुहाइ ॥
कोउ निहारति मुख छवी, कोउ चरण उरलाइ ॥
चौबोला-कोउ चरण उरलाइ कोऊद्दग भरिकै कहाति मुरारीजी॥

एक पीत पट छोर रही धरि कोउ मुखरही निहारीजी ॥
जनु बन घन घेरचो बहुदामिन मिलि हरिसों यों नारीजी ॥
कृपा दृष्टि सब ओर निहारे युवतिनको गिरिधारीजी ॥ १ ॥
बैठे तहाँ पुनि हरि हरषाई चहूं ओर ब्रजनारीजी ॥
सबके सन्मुख राजहिं सुन्दर छवि सागर बनवारीजी ॥
यह सब हँसत कियो मैं ख्याला बोले विहँसि मुरारीजी ॥
प्यारी कत बेहाल भई तुम मुहि प्राणहुँते प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सकुची सुन पिय सुख वचन, मनहीं मन हरषाय ॥
कहि कहि कोमल वचन हरि, डारचो दुख विसराय ॥

चौ०-डारचो दुख विसराय अतिहि आनंद सबन उपजायोजी
सुफल मनोरथ सबको कीनो कियो सबन मन भायोजी ॥
पूरण करी साध हरि सबकी जो जाने मन चायोजी ॥
भये कान्ह प्रीतम अनुकूले मिल सबहिंन सुख पायोजी ॥ १ ॥
तब हरिसों सब नवल किशोरी पूँछति कहो कन्हाईजी ॥
प्रेम प्रीतिकी रीति सुहाई हमाहिं कहो समुझाईजी ॥
एक जो प्रीति परस्पर कहिये एक एक दिश लाईजी ॥
ताको कहा कहत जगमाई दोउअन मानत नाईजी ॥ २ ॥

दोहा—उत्तम प्रीति जो कहत सब, कहो सोइ समुझाइ ॥
हम अबला जानत नहीं, पूछति तुम्हें कन्हाइ ॥

चौबो०-पूछति तुम्हें कन्हाइ कहन लगीं हरिसों सब ब्रजबालाजी
सुनि गोपिनके वचन रसाला भये प्रसन्न कृपालाजी ॥
यदपि जगत गुरु अजित सनातन करुणासिंधु दयालाजी ॥
हारे तदपि प्रेम बश मोहन अपने मुख नँदलालाजी ॥ १ ॥
सुनहुँ प्राणवल्लभ प्रिया तुम कहत भये सुखदाईजी ॥
निपुण प्रेमके पंथ मझारी तुम समान कोउ नाईजी ॥

तदापि तुम पूछतिहो जैसे कहों तुमहिं समुझाईजी ॥
एक जो प्रीति परस्पर होई स्वारथ हेतु बताईजी ॥ २ ॥
दोहा—आपुसमें हित करत जिमि, पशू पशूपर प्यार ॥
सो वह प्रीति कनिष्ठहै, जासु बँधत संसार ॥
चौबोला—जासु बँधत संसार दूसरी प्रीति एक दिश लावैजी ॥
करत धर्म अधिकारी जोई सोई प्रीति निभावैजी ॥
रक्षतहै सुतके हित जैसे मात पिता चित लावैजी ॥
सोवह मध्यम प्रीति कहावै उत्तम गति जनपावैजी ॥ १ ॥
जोये दोउअनको नहिं मानैं गुण दूषण नहिं लावैजी ॥
तिन्हें कृतज्ञ कहत सब कोई पुनि अज्ञान कहावैजी ॥
उत्तम प्रीति जानिये सोई अनायास उपजावैजी ॥
दुहुँ दिशि हठि करि प्रीति बढ़ावै नहिं निमित्त कछु आवैजी ॥२॥
दोहा—उत्तम प्रीति सोई कही, अंतर नेकु न होइ ॥
मैं ऋणिया तुमरो सही, करी प्रीतिं तुम सोइ ॥
चौबोला—करी प्रीति तुम सोइ कोटि उपकार करो तुम पाईजी ॥
हे प्रिया ब्रजसुन्दरी मैं उऋण तुमते नाईजी ॥
तुमने यह करनी करी जो सो कापै बन आईजी ॥
लोक वेद मर्यादा मम हित तृण सम तोरि बहाईजी ॥१॥
अब यह दोष कियो मैं तुमते दूरकरो सो प्यारीजी ॥
कियो परमसुखमें यह अंतर दियो विरह दुखभारीजी ॥
ऐसे प्रेमाधीन भये हरि कहि कहि वचन विहारीजी ॥
दूरकरी तब सब युवतिनके मनते गाँस मुरारीजी ॥ २ ॥

अथ महामंगल रासलीला।

दोहा—विहारन प्रभुके वचन सुन, बाढ़्यो परमानन्द ॥
प्यारी पिय नँदलालकी, परम मुदित तिय वृन्द ॥

चौबोला–परमैमुदित तियवृन्द पीय मुखरसवाणिसुनपाईजी॥
गोपीजन सब मन हरषाई आनँद उर न समाईजी॥
हँसि हँसि बहुरि लाल उरलाई दियो संदेह मिटाईजी॥
देखिं सबनकी प्रीति श्याम पुनि रास रुची उपजाईजी॥ १॥
वैसोइ सुख सबको उपजायो वही भाव भइ गोरीजी॥
यह जान्यो सबहिन तबहींते करत रास यहि ठौरीजी॥
अंतर्ध्यान चरित सब भूली भइ आनंद किशोरीजी॥
बिच बिच श्याम बीच बिचगोरी रासमंडल विधिजोरीजी॥२॥

दोहा–वैसेइ मधि हरि राधिका, वैसिहि प्रीति सुहाइ॥
वैसिहि बाजत मुरलिया, थकित भयो उड़ैराइ॥

चौबोला–थकित भयो उड़राइ वैसेई सुरविमान नैभ आवैजी॥
वैसेइसुर मुनि गंधर्व मोहे निरखत ब्रज सुख पावैजी॥
वैसेइ खग मृग नवद्रुम वेली यमुना तट छबि छावैजी॥
वही रासरस शोभित सुन्दर त्रिविध पवन सुहावैजी॥ १॥
करत वैसोइ रास रस पुनि युवती अति छबि छाईजी॥
गौर अंग सब वैसैं किशोरी मुख छबि शशिहि सुहाईजी॥
जोरे पंकज पाणि बाहू मृणाल मंडल लाईजी॥
मध्य सबके श्याम श्यामा रूपराशि सुखदाईजी॥ २॥

दोहा–शीश मुकुट भूषण वसन, अति छबि परम सुहाइ॥
अंग अंग निरखत रती, कोटिन मदन लजाइ॥

चौबोला–कोटिन मदैन लजाइ बजत चरणन नूपुरैछबिछाईजी
वीन ताल मृदंग उपंगा चंग साज सजाईजी॥
भरे प्रेम आनंद परस्पर निरखत छबि हरषाईजी॥
नवल नागरी ब्रज वधू सब नागर नवल कन्हाईजी॥ १॥

१ अत्यानन्दित। २चन्द्र। ३ आकाश। ४ अवस्था। ५ कामदेव। ६ बिछिया।

रहे निरखि सुर भूलि जुरे सब सुन्दरि सहित विराजेजी ॥
पुनि पुनि बरषत फूल सुखन सब कहत धन्य ब्रज आजेजी ॥
करि दिग विजय नृपतिवर जैसे हरि मुख मुरली बाजेजी ॥
बैठी पाणि सिंहासन गाजै अधर छत्र शिर साजेजी ॥ २ ॥
दोहा—अधर छत्र शोभित सुभग, चँवर चिकुर छबिभार ॥
सन्मुख आदर सहित सब, दूरहि करत जुहार ॥
चौबोला-दूरहि करत जुहार रहे मधु पिक वंदी गुण गाईजी ॥
मागध मदन प्रशंसि सुनावे अति मन हरष बढाईजी ॥
मानमहीपति बल मथि मानो ल्याये युवतिन काईजी ॥
विनहिं पनचको दण्ड भेद कियो ब्रह मंड सुर जाईजी ॥ १ ॥
ब्रह्मा शिव सनकादिक ज्ञानी जय जय रहे सुनाईजी ॥
नारि पुरुष जड़ जंगमजे सब किये सकल वश माईजी ॥
थक्यो पवन जल अनल सिरानी विधि कृत सकल मिटाईजी ॥
निज ठकुरायन रेखा बांची भये वशहिं अधिकाईजी ॥ २ ॥
दोहा—रच्यो राजसूयज्ञ रस, रास विपिन शुभधाम ॥
तहाँ अधिकारी सांवरो, मोहन सुन्दर श्याम ॥
चौबोला—मोहन सुन्दर श्याम प्रेमरस सबको दान चुकावेजी ॥
बढ्यो माधुरी हेत लोग सब परमानँद सुख पावेजी ॥
बाजत मधुर मधुर सुर मुरली गोपीजन सब गावेजी ॥
राग रागिनी प्रगट दिखावे रूप अनूप सुहावेजी ॥ १ ॥
अति प्रवीन पियको मन मोहै नृत्यति सोभा पावेजी ॥
नाचत कबहुँ श्याम अरु श्यामा लखि युवती हरषावेजी ॥
ले गति चलत परस्पर सो छबि को कबि बरन बतावेजी ॥
होड़ा होड़ी रंग बढ़ावे तडप लेत छबि छावेजी ॥ २ ॥
दोहा—उरझी बेसर सों लटि:, अरु मन बैन न बैन ॥

पीत वसन वन माल लटि, उरझे नैनन नैन ॥
चौबोला–उरझे नैनन नैन नचतहारि युगल चपल शुभकारीजी ॥
प्रेम उरझ उरझे पिय प्यारी अति मन आनँदभारीजी ॥
उरझी गोपीजन लखि शोभा कहत नहीं निरवारीजी ॥
अति रस रंग बढ्यो सुखभारी थेइ थेइ बोलति सारीजी ॥ १ ॥
मगन सकल रस सिंधुनिहारें रीझ रीझ बलि जाईजी ॥
मगन सब रस रास सुख निधि तन मन वारि वहाईजी ॥
हिय हुलास नाहिं जाय कही द्युति युगल रूप छबिछाईजी ॥
कियो जु तप पति हेत बारह मास सो पति पाईजी ॥ २ ॥
दोहा–कियो मंत्र तव व्याहको, गावति मंगलचार ॥
ललित कुंजबितान शुभ, लतानिमंडलभार ॥
चौबोला–लतानिमंडल भार बहू रंग वंदनवार सुहाईजी ॥
चारु सुमन छवि अति अधिकाई निरख सकल सुखपाईजी ॥
यमुना पुलिनरची शुभवेदी अति विचित्र मनभाईजी ॥
वरन सकै छवि को कवि जाकी शोभातिहुँ पुर छाईजी ॥ १ ॥
तहाँ श्रीनँदनन्द लाडिलो श्री वृषभानु दुलारीजी ॥
दूलह दुलहिन राजहिं सुन्दर सोभा अमित अपारीजी ॥
भरी परम उत्साह सुन्दरी ललितादिक ब्रजनारीजी ॥
लागीं करन विवाह विविध सब प्रीति रीति उरधारीजी ॥ २ ॥
दोहा–मोर मुकुट रचि मोर करि, सो शिरधर बनवारि ॥
तन घन श्याम अरु पीतपट, घन दामिन बलिहारि ॥
चौबोला-घन दामिन बलिहारि माल चन हारि गरमाहिं सुहाईजी ॥
निरखत इन्द्र धनुष द्युति लाजे अति छबि बरनि न जाईजी ॥
ललित अंग तन भूषण जाला कुंडलकी झलकाईजी ॥
सकल कलागुण रूप निधाना त्रिभुवनके सुखदाईजी ॥ १ ॥

जाके मन्मथ सैन वराती फूले विटप सुहावैजी ॥
करिकोलाहल पिक शुक बोले नचत मोर छविछावैजी ॥
नभ सुरगण दुंदुभी बजावै गंधर्वजन सब गावैजी ॥
ब्रजतिय करति सकल मनभाये सुरन सुमन बरसावैजी ॥ २ ॥

दोहा—शुभग सँवारी लाडिली, सारी सुरंग सजाय ॥
नख शिख भूषण सुखछवी, लखि शशिरह्यो लजाय ॥

चौ-०लखि शशि रह्यो लजाय शुभघरीमानिसकलब्रजनारीजी॥
शरद निशा पून्यो विमल शशि निरखि प्रफुल्लित भारीजी ॥
मधुर वचन कहिकै कियो हँसि पाणिग्रहण बनवारीजी ॥
पढत नभ विधि वेद वाणी जै जै सुरन उचारीजी ॥ १ ॥
तब आलिन हँसि गांठि जोरी प्रेम गांठि हिय पारीजी ॥
सहस सोरह संग सखियन फिराति भांवरी सारीजी ॥
पूरण सदा भई सबके उर बाढ्यो आनँद भारीजी ॥
दूलह श्रीमोहन नँदलाला दुलहिन राधाप्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा—निरखि देव वरषैं सुमन, हरष न हिये समात ॥
वृन्दावन रस रास सुख, लखि सब धूम सिहात ॥

चौबोला—लखि सब धूम सिहात परस्पर सुर गण अति हर्षाईजी॥
यह सुख हमसों दूर कहत क्यों लगहिं धूरि उड़ि आईजी ॥
नवनागर बर नवल किशोरी युवतिन मध्य सुहाईजी ॥
शोभा अमित पारको पावै अति छवि बरनि न जाईजी ॥ १ ॥
दूलह श्याम दुलहनी राधा रूप सिंधु दोउ भारीजी ॥
रंग भीनी रंग भीने दोऊ राधा श्याम मुरारीजी ॥
निरखि युगल छवि होय सुखारी रंग भीनी ब्रजनारीजी ॥
भरी प्रीति रस गारी गावैं सुख पावैं पिय प्यारीजी ॥ २ ॥

दोहा—बार बार दंपति गुणन, गावति सब ब्रजनारि ॥

उपजावति सब मोह उर, हास विलास अपार ॥
चौ०-हास विलास अपार बजत नभ दुंदुभि अति छवि छाईजी॥
निरत कला रंभादिक साजैं छवि वरनी नहिं जाईजी ॥
हंस मोर पिक चातक बोलैं डोलत मृग ढिंग आईजी ॥
वारति तिय भूषण हर्षाई देत मृगन पहराईजी ॥ १ ॥
एक सखी वृषभानु रूप धरि एक नंद बनिआईजी ॥
अतिहित मिले महर दोउ विनती श्रीवृषभानु सुनाईजी ॥
तब वृषभानु जोरकर विनयो सुनहु महर नँदराईजी ॥
हम भये अब सकल सनाथा कृपा तुम्हारी पाईजी ॥ २ ॥
दोहा-बडे पुण्यते तुम सगे, मिले हमें नँदराइ ॥
सकल जनन शिर मुकुट मणि, सुन्दर कुँवर कन्हाइ॥
चौ०-सुन्दर कुँवर कन्हाइ सुनहु हम तुम समान कोउ नाईजी ॥
तुम गेह मंजन हेत कन्या दई तुमहिं नँदराईजी ॥
भानुपुरके लोग जे सब तुम्हरे दास सदाईजी ॥
गहे चरण वृषभानु नंदके बहुविधि विनय सुनाईजी ॥ १ ॥
अति आनंद भरे अनुरागे तब बोले नँदराईजी ॥
सुनहु महर वृषभानुजु धनि धनि तुम समान कोउ नाईजी ॥
तुमसे समुद्रनसों सुनो संबंध न मांगे पाईजी ॥
सुन्दर निर्मल यश तुम्हारो लोकनमें रह्यो छाईजी ॥ २ ॥
दोहा-नेह तुम्हारो श्याम सों, प्रीति पुरातन जानि ॥
करी कृपा कन्या दई, रूप गुणनकी खानि ॥
चौबोला-रूप गुणनकी खानि कामना पूरण भई हमारीजी ॥
अब हम भये बड़े सब भाँतिः यह सब कृपा तुमारीजी ॥
नागर नवल किशोर हरष मन मन मन हरषित प्यारीजी ॥
लखि रसरीति सखिनकी सारी उपजत प्रेम अपारीजी ॥ १ ॥

विलसत अति आनंद सकल मिल रस विलास ब्रजनारीजी ॥
कोकहिसकै सुहाग सुखहि भये प्रीति विवश बनवारीजी ॥
त्रिभुवन पति दूलह करि पाये भइ प्रसन्न मन सारीजी ॥
व्याहरीतिं सब करि ब्रजनारी गावति यशोदहि गारीजी ॥ २ ॥

दोहा—कर कंकण छोरन विधिः, रचि रचि गाँठि लगाय ॥
छोरहु कंकण श्याम अब, कहति सखी हरषाय ॥

चौबोला-कहति सखी हरषाय तुम्हें सब कहत चतुर गिरिधारीजी
यह न होय धरिबो गिरिको कर कहति सकल ब्रजनारीजी ॥
कै छोरो कै दोउ कर जोरो सुनो श्याम बनवारीजी ॥
दुलहिनके परि पाँय निहोरो छोरहु वेग[1] मुरारीजी ॥ १ ॥
बड़े कहावत हो ब्रजनाथा कंपत हाथ कन्हाईजी ॥
छोरहु वेग कि पठवहु अपनी यशुमति मात बुलाईजी ॥
दोउ परस्पर[2] कंकण छोरे प्रेम प्रीति उरमाईजी ॥
पचिहारे[3] कंकण नहिं छूटत निरखि सखी हरषाईजी ॥ २ ॥

दोहा—छोरहिं कंकण आप दोउ, जिनकोउ करो सहाय ॥
दुलहिन छोरहिं वेगके, ले वृषभानु बुलाय ॥

चौबोला—ले वृषभानु बुलाय कहति सब हँसि हँसिके ब्रजबालैजी
कमल कमल परसों तब जानो पानि लाडिलीलालैजी ॥
लखि कवि कुलहि लगत हैं साँचे रोम कटीली नालैजी ॥
दुलहिन श्रीराधा कुँवरि तहां दूलह नँदको लालैजी ॥ १ ॥
रहो सदा अविचल यह जोरी सन्तनके सुखदाईजी ॥
यह रसरास चरित हरि कीनो युवतिन हेत कन्हाईजी ॥
ब्रजतिय सुख हित करी श्याम निश मासषट्[4]हि छबिछाईजी ॥
श्रीभागवत कहो शुकभाषी वेद श्रुतिनमें गाईजी ॥ २ ॥

१ शीघ्र। २ आपसमें। ३ थक गये। ४ छः महीना।

दोहा–वेद बतावत साखि कहि, शेष सहस मुखगाय ॥
शिव ब्रह्मा सनकादि मुनि, शारदादि रटलाय ॥
चौबोला–शारदादि रटलाय गावत सब संत सदा सुखदाईजी ॥
सोरहसहस गोपे सुकुमारी तिन संग कुँवर कन्हाईजी ॥
कियो रास रस रहस अगाधा सबकी आश पुराईजी ॥
नैन सैन मुख वचन प्रकाशा हाव भाव अधिकाईजी ॥ १ ॥
भुजभरि मिलन अधर रसचाखन नृत्य गान छबिछाईजी ॥
क्षण क्षण बढ़त अधिक रसरीती इह विधि रैन बिताईजी ॥
भयो समय ब्रह्मी शुभकाला रास रमत श्रम पाईजी ॥
सोहत संग सकल ब्रजबाला यमुना गये कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–सँग शोभित ब्रजनारि सब, गये यमुन नँदलाल ॥
शरदरैन रसरास करि, भई मगन ब्रजबाल ॥
चौबोला–भई मगन ब्रजबाल रहीं सब मनहीं मन हरषावैजी ॥
जिमि मदमत्त गजहि लिये यूथा करणिन सँग छवि छावैजी ॥
बन घन सरित फिरत हरि क्रीडत निडर न कछु भय आवैजी ॥
तिमि नँन्दलाल जननाहितकारी रसनिधि परम सुहावैजी ॥१॥
प्रेमानंद भई ब्रजनारी वेद मर्याद मिटाईजी ॥
वृन्दावन यमुना तट करि सब रहसकेलि सुखपाईजी ॥
विहारन गुण ब्रजनारिनके सब गावत सुर हरषाईजी ॥
धनि वृन्दावन धन्य रास धनि श्यामा कुँवर कन्हाईजी ॥ २ ॥
दोहा–वृन्दावन सुख एक पल, नहिं सुरपुर समतूल ॥
सुरगण मन आनँद भरे, कहि कहि बरषैं फूल ॥
चौबोला-कहि कहि बरषैं फूल यमुन जल क्रीडत नवल विहारीजी
सोरहसहस संग ब्रजनारी तिन माधि मोहन प्यारीजी ॥
दंपति गौर साँवरी जोरी राधा श्याम मुरारीजी ॥

कोउ कटि लौं ग्रीवा लौं कोऊ जलमें ठाढीं सारीजी ॥ १ ॥
अति अपार छबि पार न पावै कवि उपमा किमि गावैजी ॥
छिरकत पाणि परस्पर सो है पियको मनहिं चुरावैजी ॥
सलिल सिथल सोहत नँदनंदन भाल तिलक छविछावैजी ॥
पंच रंग भयो यमुन जल जाते छबि मय लहरि सुहावैजी ॥ २ ॥

दोहा-लिये संग घनश्यामको, कराति विहार अपारि ॥
नाना विधि जलकेलिकरै, रूप छटासीनारि ॥

चौबोला-रूप छटासी नारि एकही एक अंगभरि लाईजी ॥
हास विलास कराति विधि नाना सो छबि बरनि नजाईजी ॥
एकनलै अथाह जलडारे लखि सुख व्याकुलताईजी ॥
इक भाजत इक पाछे धावै एक पकरि ले आईजी ॥ १ ॥
कंठ लगाय लेत पियताई आति प्रसन्न ब्रजबामाजी ॥
सो सुख कवि सों कह्यो न जाई अति विचित्र अभिरामाजी ॥
करत केलि यमुना जल में हरि ब्रजललना सँग श्यामाजी ॥
निशि श्रम मेटि आलस सब खोयो भये सुखी सुखधामाजी॥२॥

दोहा-अविगतिकी गति को कहै, अलख लखी नहिं जाय ॥
सो भोगी ब्रजतियनको, योगी सकत न पाय ॥

चौबोला-योगी सकत न पाय हरीसो भक्तनके हितकारीजी ॥
जल बिहार विहरत सुखपाई रास रंग मन भारीजी ॥
युवती मंडल करि कर जोरें माधि श्यामा बनवारीजी ॥
वही भाव मन में उपजावें निरखत श्याम मुरारीजी ॥ १ ॥
विहरति नारि हँसत नंद नंदन गहि अंकम हरि लावेजी ॥
प्यारी श्याम अंजली डारे लखि छबि तिय हरषावेजी ॥
जलक्रीडा सुख करत कन्हाई सुरन सुमन बरषावेजी ॥
लीलासागर परम अपारा कवि किहिं विधि कर गावेजी ॥ २ ॥

दोहा—करि जलकेली तियन सँग, आये तट बलवीर ॥
भीजे पट लपटे तनहिं, लटपट चूवत नीर ॥
चौबोला—लटपट चूवत नीर यमुन तट ठाढे कुँवर कन्हाईजी ॥
पुलनि पवित्र परम छबिछाई निरखि हँसे सुखदाईजी ॥
तब इक तरुको हरि मन मोहन आयसु दइ हरषाईजी ॥
तिन अभिराम वसनवर भूषण दिये विविध वरषाईजी ॥ १ ॥
निज निज रुचि लैलै सब नारिन जो जाके मन भावेजी ॥
उर आनंद न जात कही छबि नवल शृँगार बनावेजी ॥
करि शृँगार तन नवल किशोरी हरिके सन्मुख आवेजी ॥
निरखि श्याम छबि मन हरषावे विदा करत सकुचावेजी ॥२॥
दोहा—जाहु सदन अब सब तिया, हँसि बोले नँदलाल ॥
अति आदर दै दै सबन, घर पठई ब्रजबाल ॥
चौबोला—घर पठई ब्रजबाल चलीं तब वृन्दावन तें सारीजी ॥
निशि सुख टरत न उरते टारी भईं आनँद मन भारीजी ॥
भांवरि दे आईं संग हरिके मगन भईं ब्रज नारीजी ॥
मनके सुफल मनोरथ कीने पति पाये बनवारीजी ॥ १ ॥
गईं सदन सब हरष बढ़ाये गुरु जन सोवत पायेजी ॥
जग स्वामी हरि यह मति ठानी ब्रज युवतिन मनभायेजी ॥
प्रातकाल सब ब्रजजन जागे निज निज काज सिधायेजी ॥
नंदधाम गये नँदकेलाला यह कोउ जान न पायेजी ॥ २ ॥
दोहा—काउ न जान्यो ख्याल यह, गये धाम बनवारि ॥
करी श्याम लीला रहस्य संतनको सुखकारि ॥
चौ०-संतनको सुखकारि करी हरि लीला परम सुहाईजी ॥
सुर मुनिजनकी आनँदकारी भक्तनको सुखदाईजी ॥
ज्ञान ध्यान श्रुति मति पर पूरण परम सार छबिछाईजी ॥

मंत्र यंत्र व्रत फल बहुनाना ध्यानधरैं जनपाईजी ॥ १ ॥
धन्य श्री शुकदेव यह रस श्री भागवत सुनावैजी ॥
निगम नेति अगाध श्रीगुरु कृपाविना नहिं चावैजी ॥
भावहि करि नित हरिको ध्यावै भावहि यह रस पावैजी ॥
सीखै सुनै प्रीति मनलावै स्वरुचि करि यह गावैजी ॥ २ ॥

दोहा–यह लीला हरिकी शुभग, प्रेम सहित जे गाइ ॥
ऋद्धि सिद्धि सब कहाकहों, भक्ति अनूपमपाइ ॥

चौबोला–भक्ति अनूपम पाइ प्रेम दृढ युगलरूप चितलावैजी ॥
अचल निवास करैं शुभ ते जन वृन्दावन निज पावैजी ॥
यहै आशा राखि उरमें विहारन विनय सुनावैजी ॥
कृपाकीजै श्याम श्यामा चरण शरण मन चावैजी ॥ १ ॥
चरित ललित नँदलाल किये सब रास विलास सुहावैजी ॥
इतनो कहा विवेकें चरित सब कापै वरनत आवैजी ॥
जिमि पिपीलैका सिंधु अगाधा निकसि पार किमिजावैजी ॥
कृपापाय सतगुरुकी कछु यक दास विहारी गावैजी ॥ २ ॥

अथ मानचरित्र लीला।

दोहा–करत चरित लीला विविध, नित प्रति श्यामा श्याम॥
निर्विकार निर्गुण हरी, भक्तनके सुखधाम ॥

चौबोला–भक्तनके सुखधाम धामनित वृन्दावनछबि छायोजी॥
नित्य रास रस वेद वखानत भक्तनके मनभायोजी ॥
भक्तन हेत विविध तनधारैं करत भक्तमन चायोजी ॥
सदा भक्तवत्सल कृष्णकृपाला भक्तन हित व्रज आयोजी ॥१॥
युवतिन प्रति निज रूप बनाये रासशरद निशिठानीजी ॥
कीनो सुफल मनोरथ सबको पति हित करि सबजानीजी ॥

१ वेद। २ ज्ञान। ३ चींटी। ४ विकारोंसे रहित।

सदा भक्त बांछित फलदानी तब कृपालु मनआनीजी ॥
कीनो इन मन गर्वरासमें हरचो है अंतर्ध्यानीजी ॥ २ ॥
दोहा—रही साध इनके मनहिं, श्याम पनायो नाहिं ॥
करों साध पूरण सोई, कहत श्याम मनमाहिं ॥
चौबोला—कहत श्याम मन माहिं रचों इक मानचरित्र उपाईजी॥
पांयन परि परि सबन मनाऊँ यह हरिके मनआईजी ॥
करिविभेद रसरीताहिमें अब देहुँ मान उपजाईजी ॥
इनके मुख खंडित वचन अब कहवाऊं सुखदाईजी ॥ १ ॥
परम विचक्षण रसिक शिरोमणि सकल गुणनके धामाजी ॥
एक प्रेम वश रहत सदा हरि नवरस सागर श्यामाजी ॥
श्रीराधा मनमोहन प्यारी, नव नागरि अभिरामाजी ॥
मगन रास रस फिरत कन्हाई कुंज भवन वन ग्रामाजी ॥ २ ॥
दोहा—करति भवन शृंगार प्रिया, तहाँ आये नँदलाल ॥
देखि प्रिया पियको हँसी, लई अंक हरिवाल ॥
चौबोला—लई अंक हरिवाल देखि रहे प्यारी छबि गिरिधारीजी
जात कमल मुखपर बलिहारी अति मन आनँद भारीजी ॥
इहि अंतर पियके उरमाई निज परछांह निहारीजी ॥
अति सनेह उपज्यो भ्रम भारी झिझकि भई प्रिया न्यारीजी॥ १
और नारि पियके उर जानी कहति मनहिं मन प्यारीजी ॥
राखत सदा हियेमें याही यह मुहिं आज दिखारीजी ॥
कियो मान यह भ्रम उपजायो कहति वचन रिस भारीजी ॥
ऊपरकी पिय प्रीति हमारी जानी बात तुम्हारीजी ॥ २ ॥
दोहा—उरहि बसाई याहि तुम, यह अति प्यारी पीय ॥
धनि धनि याको भाग्य है, बसति तुम्हारे हीय ॥
चौबोला—बसति तुम्हारे हीय याहिं सों राखहु पिय हितमानीजी

हमसों मुखकी बात बनावत अब हम सब यह जानीजी ॥
भली करी पिय मोहिं दिखाई मैं कछु रिस नहिं आनीजी ॥
अब उरते न्यारी जिन कीजै यह प्यारी सुखदानीजी ॥ १ ॥
ऐसे कहि मुसकाय किशोरी कछु रिस उर में मानीजी ॥
चकित श्याम सुनि प्रियकी बाणी यह कह कहाति सयानीजी ॥
सांच कहति कैधों करि हांसी कतरिस जियमें आनीजी ॥
समुझी नहीं कहा जियमानी झझकि उठी भ्रम जानीजी ॥ २ ॥

दोहा—मम ढिंग बैठाति क्यों नहीं, गहन लगे भुजश्याम ॥
मोहिं छुवो जिन कान्ह अब, गहो हिये सोइ बाम ॥

चौ०-गहो हिये सोइ बाम भये अब तुमहीं चतुर विहारीजी ॥
हम दासी अरु ये पटरानी रहे याहि उर धारीजी ॥
हमसों ऐसी बात बनाई हिये बसाई प्यारीजी ॥
लखि लखि प्रिया वदन सुखकारी हँसत श्याम बनवारीजी॥१॥
तो बिन उर को वसत किशोरी हँसि बोले बनवारीजी ॥
कहति कहा भामिन भइ भोरी तोते अरु को प्यारीजी ॥
तू मम श्रवण नैन मुख बानी जीवन प्राण अधारीजी ॥
वृथा क्रोध कत जियमें आनत मानाति नाहिं हमारीजी ॥ २ ॥

दोहा—सुनो श्याम हिरदे बसत, सो छिपये न छिपाय ॥
ज्यों शीशीके माहिं जल, परगट परत लखाइ ॥

चौबोला—परगट परत लखाइ श्याम अब बातें कहा बनावोजी ॥
जैहैं कहुँ अनखाय उरहिते तब पाछे पछितावोजी ॥
वह नागरि तुम नागर दोऊ अति हित कारि सुखपावोजी ॥
भली करी लै सौति दिखाई अबजिन मोहिं खिजावोजी ॥ १ ॥
जाहु चले अब मैं सुखपायो मानकियो यों प्यारीजी ॥
रही मौन निठुराय देनलगी वाहि मनाहिं मन गारीजी ॥

बोलत नाहिं मनाहिं भयपाये सोच रहे बनवारीजी ॥
क्यों प्यारी ऐसी रिसहाई वृथा कहाजिय धारीजी ॥ २ ॥
दोहा–बिनहिंकाज कत रिस करै, मानतिहो क्यों नाइ ॥
मेरे उरपर लाडिली, ही तेरी परछाँइ ॥
चौबोला–ही तेरी परछाँइ सुन्दरी सोलखि कत भरमाईजी ॥
यह सुनि कुँवरि राधिका प्यारी बोली अति रिसहाईजी ॥
जाहुचले बोलों नहिं तुमसों बातें कहत बनाईजी ॥
यह कहि अधिक भई रिस माई देखत कुँवर कन्हाईजी ॥ १ ॥
भये विरह व्याकुल बनवारी सोच रहे मनमाईजी ॥
गयो सरोज वदन कुम्हिलाई एक सखी तहाँ आईजी ॥
सो हरिसों बूझत भइ ऐसे मोहिं कहौ समुझाईजी ॥
तुम्हरी दशा आज भइ कैसी बैठे कहा गमाईजी ॥
दोहा–अति व्याकुल देखत तुम्हें, क्यों तन रहे भुलाय ॥
ऐसो सोच परचो कहा, रह्यो वदन कुम्हिलाय ॥
चौबोला–रह्यो वदन कुम्हिलाय सुनी तब बोले कुँवर कन्हाईजी
विरह विकल कहि जात न वाणी रहे अतिहि अकुलाईजी ॥
मान कियो वृषभानु किशोरी कह्यो न मैं कछु ताईजी ॥
लखि मेरे उर निज परछाई बैठी रूस वृथाईजी ॥ १ ॥
मैं कहिकै बहु विधि समुझाई को अब ताहि मनावैजी ॥
विन समुझे इतनो हठ कीनो अब मुहिं मदन सतावैजी ॥
ऐसे कहि सोचत नँदलाला नैन नीर भर आवैजी ॥
विरह विकलता पिय जिय जानी सखि मुख वचन सुनावैजी॥२॥
दोहा–कह्यो धीर धरिये हरिः, चलहु कुंज बन धाम ॥
मैं प्यारी लै आयहों, तो कहियो मम नाम ॥
चौ०–तो कहियो मम नाम तुमहिं मैं आनि मिलाऊँ प्यारीजी ॥

गई लिवाय बनहिं हरिको तहां बैठारे बनवारीजी ॥
मैं ले आवत राधा प्यारी सुनहु लाल गिरिधारीजी ॥
कहा मान करिहै सुकुमारी मो आगेकी बारीजी ॥ १ ॥
ऐसे कही श्यामसों आली प्यारी ढिग अब जाऊँजी ॥
श्रीवृषभानु कुँवरि ल्याऊँ तो आज कहा मैं पाऊँजी ॥
चपल चली मन रचत सयानी नई इक बात बताऊंजी ॥
देखहिंधौं कहा कहि है मोसों अबही मान छुडाऊंजी ॥ २ ॥

दोहा–बैठी हरि सों मान करि, कहा लई उरधार ॥
गई सखी जहां राधिका, मन मन करति विचार ॥

चौबोला–मन मन करति विचार सखी तब प्यारीके ढिंगआईजी
मुख देखतही दूती जानी समुझि लई मन माईजी ॥
सहजहि बोल ताहि ढिंग लीनी सहजहि बात सुनाईजी ॥
सहजहि सखी कह्यो प्यारी सों चल वन श्याम बुलाईजी॥१॥
सुनत कह्यो प्यारी अनखाई क्यों मुहि श्याम बुलाईजी ॥
मैं अब श्याम भले करि चीने याई हित तू आईजी ॥
कहा कहों तोसोंरी आली भले वे कुँवर कन्हाईजी ॥
उनकी महिमा कहत न आवै नई नारि मन भाईजी ॥ २ ॥

दोहा–अब तासों अतिहित करै, लीनी उरहि बसाइ ॥
सुख विलसत दोऊ तहां, तोहिं को टारि पठाइ ॥

चौबोला–तोहिं को टारि पठाइ सखीरी कहा कहति तू आईजी
आज कहा कछु कलह भईरी क्यों राधा रिसहाईजी ॥
तबहीं आज अनमनी बैठी मैं कछु बात न पाईजी ॥
मोसों नाहिं कछु श्याम कह्योरी सहजहि लेन पठाईजी ॥ १ ॥
कहा धों परी पुकार तहाँ अब देखहु नैनन जाईजी ॥
लैलै तेरो नाम सकल मिल कहहु सुनाय सुनाईजी ॥

कौन कौन को गँथरी प्यारी तैंधौ लियो छिंडाईजी ॥
डारि देहु जाको जो लीनों तेरे कहा कछु नाईजी ॥ २ ॥
दोहा—शोर लगायो उन सबन, तबहिं बुलाई तोय ॥
हरि तेरी दिशते लरे, तू उनपर रिस होय ॥
चौबोला-तू उनपर रिस होय लाड़िली भली बात यह नाईजी ॥
मैं काको धन लियो छिपाई यह कहा बात उपाईजी ॥
काहेको हरि झगरत मोपै इती मया कहा आईजी ॥
जैसे हैं तैसे हरि जाने महिमा कहिय न जाईजी ॥ १ ॥
मैं उनपै अब जाउँ न सपने कहा कहति तू आईजी ॥
हौं कहा तोहिं मनावन आई कर तू मान सवाईजी ॥
कहा करत बातें यों ऐठी तो क्यों परधन ल्याईजी ॥
देति जवाब सबन किन जाई मोपै कहा सतराईजी ॥
दोहा—बारबार कहा कहतरी, तू मोको डरपाय ॥
मैं नाहिं काऊको लियो, झूंठहि दोष लगाय ॥
चौबोला-झूंठहि दोष लगाय लरतको कौन पुकार लगाईजी ॥
कहै न तिनको नाम सांच तब मैं वादिहौं मन माईजी ॥
श्याम निकट बैठे सब हैंरी चल देखति क्यों नाईजी ॥
एक एक करि तोहिं गिनाऊं कहां लगि नाम बताईजी ॥ १ ॥
नभ जल धरणि बनहुँते आये नाम कहे नहिं जाईजी ॥
तोतू कत बन चलत डराई जो नहिं गथहिं छिंडाईजी ॥
भली कहत अलि लगत अनैसी कहा बान परी आईजी ॥
श्याम बिना को न्याव करैरी तिनसों करत लराईजी ॥ २ ॥
दोहा—कोटि करौ मिलिहौ पुनिः, ह्वैहो एकहि जाइ ॥
वे अरु तुम न्यारे नहीं, चलमुहिं लेन पठाइ ॥
चौ०-चल मुहिंलेन पठाइ मानकही उठतोहिं श्यामबुलाईजी ॥

श्रवण लागि कहि मोहिं सुनाई तबहिं बुलावन आईजी ॥
वे सब हरि पै जाय पुकारें जिनको तू धन ल्याईजी ॥
अलि लखिं अलक कहत छबि मेरी इन्दु वदन बलिजाईजी १॥
मृगन मीन छबि दृगन चुराई खंजन देत दुहाईजी ॥
शुककी छबि नासाहरिलीनी सो वह रह्यो दिखाईजी ॥
वैनन करी कोकिला हीनी बोल सकत सो नाईजी ॥
अधर बिंब दाडिम दशन छबि कंठ कपोत सुहाईजी ॥ २ ॥

दोहा—सरल तरोना तरणि दुति, लीनी सकल छिनाय ॥
चक्रबाक कुच युग छबिः;कटि हारि लखत लजाय ॥

चौ०-कटि हरि लखत लजाय रंभ छबि लीनी जंघ चुराईजी ॥
गज मराल गति लखत लजाये सन्मुख सकत न आईजी ॥
चरण पाणि पंकजकी शोभा लई देति क्यों नाईजी ॥
ये सब हरिसों करत लराई तैं जु करी अधिकाईजी ॥ १ ॥
अति अनीति लखिं कुँवर कन्हाई तबहीं तोहिं बुलाईजी ॥
पठई मोहिं लेन तोहिं आई प्राति उत्तर करि जाईजी ॥
इहां रही कहा वैठि मचलके जो नहिं वस्तु चुराईजी ॥
सुनि पियके गुण तिय हँसि दीनी कछु सकुची मनमाईजी॥२॥

दोहा—चतुर सखी तब तीयकी, लीनी जियकी जान ॥
हँसि बोलीरी राधिका, कहा परी तोहिं वान ॥

चौ०-कहा परी तोहिं वान लाडिली लखि निज छांह डराईजी ॥
तादिन करत शृँगार किशोरी लखि दर्पण भरमाईजी ॥
सो हरि मेटि तुरत तब दीनो मूँदे लोचन आईजी ॥
आज देखि पिय उर निज छाई कियो हठ कुँवरि वृथाईजी ॥ १ ॥
यह सुनि समुझि मनहिं सकुचाई सहिचारि कंठ लगाईजी ॥
रस करि तुरत मान विसरायो सुनि बनश्याम बुलाईजी ॥

हँसिके कह्यो सखीसों प्यारी तू कहि हरिसों जाईजी ॥
मैं अंग भूषण बसन सँवारी आवत जहां सुखदाईजी ॥
दोहा–यह सुनि हरषी दूतिका, गई जहां घनश्याम ॥
अति व्याकुल तनु सुधि नहीं, विह्वल कीनो काम ॥
चौबोला–विह्वल कीनो काम हरीको सुधि बुधि नाहिं शरीरैजी॥
क्यों हूं सुख पावत नाहीं मन बैठत उठत अधीरैजी ॥
श्री राधा राधा रट लावत बढ़त विरहकी पीरैजी ॥
बिन देखे प्यारी बनवारी अति व्याकुल बलबीरैजी ॥ १ ॥
कहूं माल कहुँ मुरली डारी विरह विकल गिरिधारीजी ॥
कहूं मुकुट कहुँ पीत पिछौरी तनुकी सुरत विसारीजी ॥
कबहुं मूंदि दृग ध्यान लगावै गावत प्यारी प्यारीजी ॥
कबहूं बैठि द्रुमनकी छाईं लोटत तहां बनवारीजी ॥ २ ॥
दोहा–ठाढे द्रुमकी डार धारि, जोवत मग घनश्याम ॥
देखि दशा तब दूतिका, हरिसों बोली बाम ॥
चौबोला–हरिसों बोली बाम काहिको अब कदरात विहारीजी॥
मैं ल्याई वृषभानु दुलारी तुम्हरी जीवन प्यारीजी ॥
विरह विषाद दूरि करडारो नेकु धीर रहो धारीजी ॥
सुनि प्यारीको नाम कन्हाई कछु तनु सुरत सँभारीजी ॥ १ ॥
मिले दूतिकासों उठि धाई कहन लगे सुखदाईजी ॥
कहां प्रिया कहि अति अकुलाये नैन नीर¹ भरे आईजी ॥
तब हँसि कह्यो दूतिका ग्वारी आवत प्रिया कन्हाईजी ॥
मैंजु प्रतिज्ञा तुमते कीनी सो विधि आजरखाईजी ॥ २ ॥
दोहा–अब अपने मन हरषिकारि, दूरकरो संदेहु ॥
आवति है वृषभानुजा, भुज भरि अंकमलेहु ॥

१ पानी। २ प्रण।